मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जुलाई-सितम्बर 2022

RNI Reference No.: 1322876 Title Code : MPHIN34795 Year : 5 Edition 22

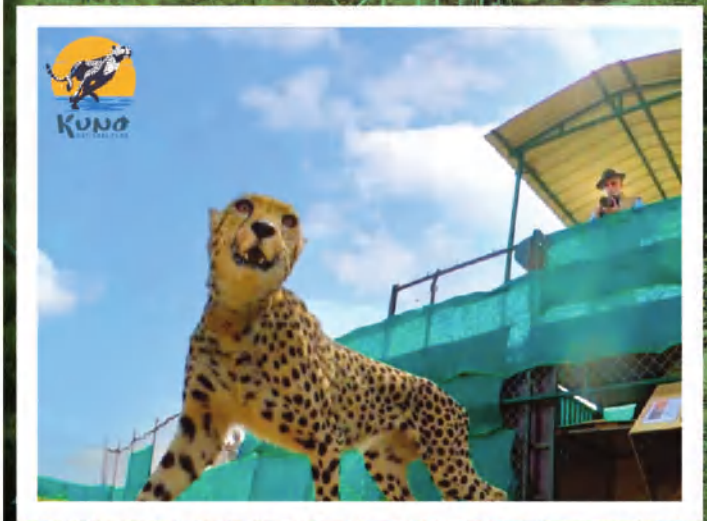

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जुलाई-सितम्बर 2022

Patron :

Ramesh Kumar Gupta
Principal Chief Conservator of Forests
and Head of Forest Force Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :

Atul Kumar Jain
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Chitranjan Tyagi
Principal Chief Conservator of Forests
(Development/ JFM)

Dilip Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(M.P. State Minor Forest Produce Trading &
Development Co-operative Federation)

Mahendra Singh Dhakad
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(CEO CAMPA)

Satyanand
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

S.P. Sharma
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Green India Mission)

Capt. Anil Kumar Khare
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)

Rakhi Nanda
Conservator of Forests (Social Forestry, Bhopal)

Alvin Burman
DCF (Research, Extension and Lok Vaniki)

B.K. Dhar
Prachar Adhikari (Samanvay)

Editor :

Dr. U. K. Subuddhi
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lokvaniki) Bhopal

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram
Gaurav Rajput

Owner & Publisher :

Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.) | Printed by Madhya Pradesh Madhyam, Bhopal

Contact :

Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140, Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in | Contact : 0755-2524239

संदेश

प्रदेश में वन विभाग द्वारा वनों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रभावी पहल हुई है। जिसका लाभ प्रदेशवासियों को मिल रहा है। वन संसाधनों से समृद्ध मध्यप्रदेश में वन, वन्यजीव एवं वनवासी एक-दूसरे के परिपूरक हैं। वानिकी विकास एवं विस्तार से वनवासी कल्याण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रदेश में जन-भागीदारी के द्वारा वानिकी गतिविधियों के क्रियान्वयन से वानिकी विकास एवं संवर्धन के बेहतर परिणाम मिले हैं, इस दिशा में विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों को वनांचल संदेश के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश पत्रिका, शासन की नीतियों के अनुरूप प्रदेश में संचालित विभिन्न वानिकी गतिविधियों के साथ ही कार्यों के आत्म विश्लेषण का मंच उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही वन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के सुझावों के माध्यम से वानिकी योजनाओं के क्रियान्वयन को बेहतर बनाने का अवसर प्राप्त होता है। विभाग के इस प्रकाशन ने विभाग के कार्यों को अभिलेखित करने के साथ ही वानिकी सेक्टर से जुड़े विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं के बीच बेहतर संवाद बनाने का अवसर प्रदान किया है।

पत्रिका के इस अंक में वन समितियों की सफलता की कहानी ‘‘कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों का पुनर्वास” राष्ट्रीय वन शहीद दिवस, औषधीय उपयोग से मानव स्वास्थ्य सुरक्षा संगोष्ठी के अवसर पर विशेष आयोजन को केन्द्र में रखते हुए वन एवं वन्यप्राणी प्रबंधन की दिशा में किये गये कार्यों को स्थान दिया गया है। मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के प्रकाशन की यह श्रंखला विभाग की विभिन्न गतिविधियों को एक मंच उपलब्ध करा पाई है, जिसका सीधा लाभ वानिकी के विभिन्न आयामों में जुड़े व्यक्तियों तथा संस्थानों को हुआ है।

इस सराहनीय प्रयास के लिए पत्रिका के सम्पादक मंडल के सदस्य तथा स्टाफ बधाई के पात्र हैं।

रमेश कुमार गुप्ता

प्रधान मुख्य वनसंरक्षक

वन बल प्रमुख

संदेश

जन समुदाय में पौधारोपण के प्रति चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। प्रदेश को वन समृद्ध बनाने के लिए वन संसाधनों को बेहतर प्रबंधन आवश्यक है। निजी क्षेत्र में पौधारोपण को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। जन साधारण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ ही पौधारोपण के प्रति उनमें जागरूकता भी बढ़ी है।

वनों के संवहनीय विकास के साथ ग्रामवासियों को वनोपज पर आधारित रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया है। संयुक्त वन प्रबंधन समितियों द्वारा वनों की सुरक्षा और विकास के कार्यों में पारदर्शिता लाने के साथ ही ग्रामीणों की सहभागिता को व्यापक करने के लिए अथक प्रयास किये गए हैं।

भावी पीढ़ी को वन, जल, जीव तथा जंगल जैसे प्राकृतिक विषयों पर एक नूतन दिशा एवं उल्लास हेतु अभिनव प्रयास, राष्ट्रीय वन शहीद दिवस, वृक्षारोपण की दिशा में अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी की भागीदारी, वन समितियों की सफलता की कहानी का वर्णन इस अंक की अपनी विशेषता है। इन जनोन्मुखी प्रयासों को अभिलेखित करने तथा जनता से संवाद की दिशा में वनांचल संदेश की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस सराहनीय प्रयास के लिये सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों एवं पाठकगण के योगदान को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

अतुल कुमार जैन

भा.व.से.
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

सम्पादकीय

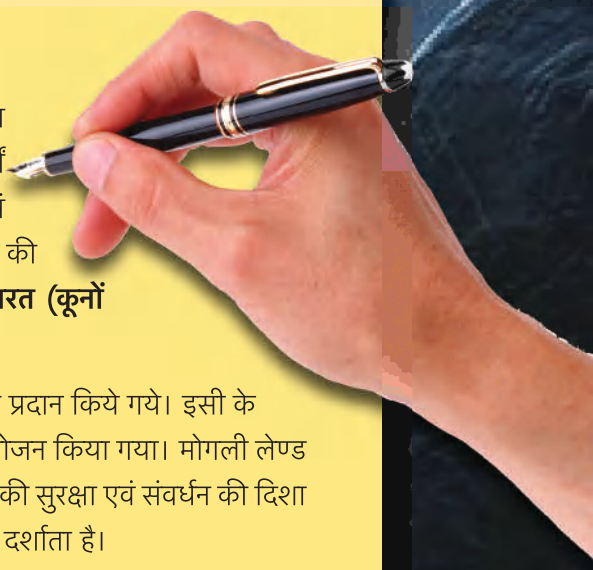

वनांचल संदेश के प्रस्तुत अंक में दी गई प्रस्तुतियां कई मायने में एक नयेपन का समावेश हैं। अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा किये गये प्रयास को विशेष संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। क्षेत्रीय, अनुसंधान एवं विस्तार, वन्यप्राणी एवं विभाग की अन्य शाखाओं में पदस्थ वन कर्मचारियों के द्वारा किये गये प्रयासों की प्रस्तुति वनांचल संदेश का प्रमुख उद्देश्य भी है। **70 वर्ष बाद चीते की भारत (कूनों राष्ट्रीय उद्यान) में वापसी** इस अंक का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वन कर्मियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार प्रदान किये गये। इसी के साथ वनकर्मियों के बलिदान के सम्मान हेतु राष्ट्रीय वन शहीद दिवस का आयोजन किया गया। मोगली लेण्ड (पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी) में बघीरा (काला तेन्दुआ) की चहल कदमी, वनों की सुरक्षा एवं संवर्धन की दिशा में ग्राम वन समितियों की सहभागिता, वन विभाग की उत्कृष्ट उप्लब्धियों को दर्शाता है।

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश को वन कर्मियों की सकारात्मक भागीदारी से चलने वाला एक जीवंत संदेश वाहक बनाने की हमारी कोशिश है। क्षेत्रीय अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे शासन की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता को दिलाने में विभागीय सहयोग की जानकारियां साझा करें। आशा है कि आप सभी के सहयोग से मध्यप्रदेश शासन, वन विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियों को जनसाधारण तक पहुंचाने से वनों, वन्यप्राणियों और वनवासी समुदायों के कल्याण की राह आसान होगी।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ. यू.के. सुबुद्धि

अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

अनुक्रमणिका

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों का पुनर्वास	1
औषधीय पौधों के उपयोग के माध्यम से मानव स्वास्थ्य सुरक्षा	4
मोगली लेण्ड (पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी) में बघीरा (काला तेन्दुआ) की चहल कदमी	7
अंकुर अभियान एवं हर घर तिरंगा अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, वनमण्डल, गुना	9
वन शहीदों कों श्रद्धांजलि, राष्ट्रीय वन शहीद दिवस 11 सितम्बर, 2022	10
अनुसंधान एवं विस्तार वर्तमान परिदृश्य एवं भविष्य की रणनीति	12
वनभोज रसोई का शुभारंभ, वनधन विकास केंद्र मैनावाड़ी, परिक्षेत्र परासिया, जिला यूनियन पश्चिम वनमण्डल छिंदवाड़ा	16
वन पुनर्स्थापन एवं आजीविका हेतु वन समिति तथा सी.एस.आर. के सहयोग से वनमण्डल शहडोल की एक पहल	19
एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत बांस सेक्टर के विकास के लिए स्टेकहोल्डर्स की कार्यशाला	24
मध्यप्रदेश में बर्न सीवियरिटी और उसका एटलस	28
नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन अर्बन बायोडायवर्सिटी कंसर्वेसन	32
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर	34

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में मानव-हाथी द्वंद विषय पर कार्यशाला का आयोजन 42

वानिकी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वनकर्मी सम्मानित 44

Rain Jackets distributed to all the frontline staff by Dr. Kunwar Vijay Shah, Hon'ble Forest Minister 47

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में अब पर्यटकों को भ्रमण करायेंगी महिलायें 48

मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन 49

महाराजा मार्तण्ड सिंह जूदेव व्हाइट टाइगर सफारी एण्ड जू मुकुन्दपुर 53

वन्यप्राणी अपराध का सफल अन्वेषण 56

जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला 59

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में वनश्री महिला क्लब द्वारा आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम 62

एक सकारात्मक पहल : शिक्षा के क्षेत्र में वन विभाग की भूमिका 63

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति (जून- सितम्बर 2022) 64

जंगल बचा नहीं करते हैं.....! 65

अखबारों के आईने में 66

वानिकी गतिविधियां कार्टूनिस्ट की नजर में 68

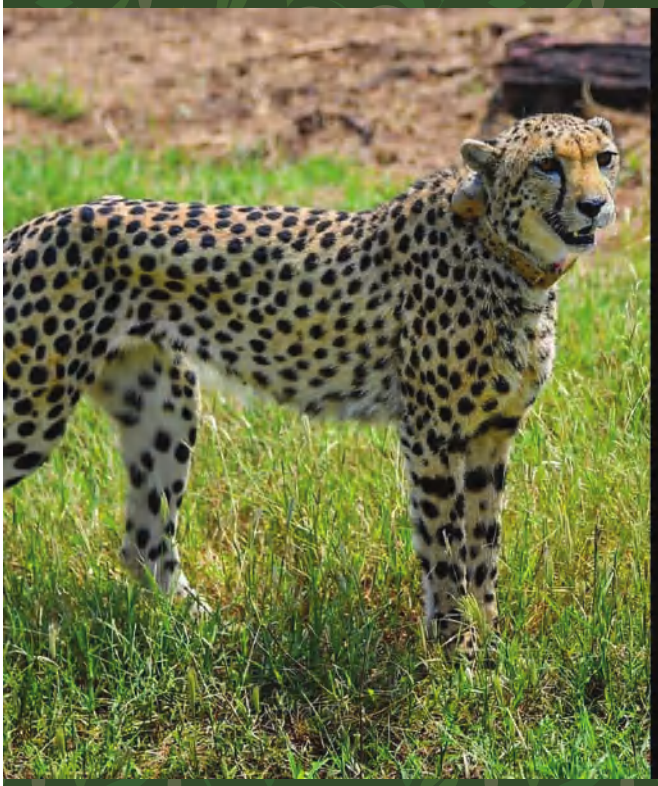

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों का पुनर्वास

मध्यप्रदेश लगातार विकास के पथ पर अग्रसर है एवं साथ ही वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी देश में अग्रणी है। प्रोजेक्ट चीता इसी दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है, जो भारत देश से एकमात्र विलुप्त मांसाहारी वन्यप्राणी चीता को भारत में वापस लाने का साहसिक प्रयास है। चीता भारत देश की संस्कृति से सदियों से जुड़ा रहा है। चीता शब्द संस्कृत शब्द चित्रका से बना है, जिसका मतलब धब्बेदार होता है। अत: चीता को मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में वापस लाना हमारी खोई हुई सांस्कृतिक विरासत को वापस लाना भी है।

वर्ष 1952 में चीता अधिकारिक रूप से भारत में विलुप्त हो गये थे। शासकीय अभिलेख अनुसार आखिरी तीन चीते वर्ष 1947 में कोरिया (छत्तीसगढ़) महाराज द्वारा शिकार किये गये थे। मान्नीय सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 2020 में अपने वर्ष 2013 के आदेश को संशोधित करते हुये अफ्रीका

महाद्वीप से चीता लाने की अनुमति दी है, जिसके फलस्वरूप **17 सितम्बर 2022 को 08 अफ्रीकी चीते नामीबिया से मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में लाये गये, जिन्हें माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार, श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा कूनो के जंगलों में छोड़ा गया।**

अफ्रीका चीते (Acinomyx jubatus jubatus) भारत में पाये जाने वाले ऐशियाटिक चीते (Acinomyx jubatus Venaticus) से भिन्न उप प्रजाति हैं, लेकिन जेनेटिकली दोनों लगभग एक समान हैं। ऐशियाटिक चीते वर्तमान में मात्र ईरान में बहुत ही कम संख्या में बचे हैं । अत: अफ्रीकी चीतों को लाने का निर्णय लिया गया। चीतों को लाने हेतु भारत एवं नामीबिया के बीच वन्यप्राणी संरक्षण एवं सतत् जैव विविधता के लिये जुलाई 2022 में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर हुये।

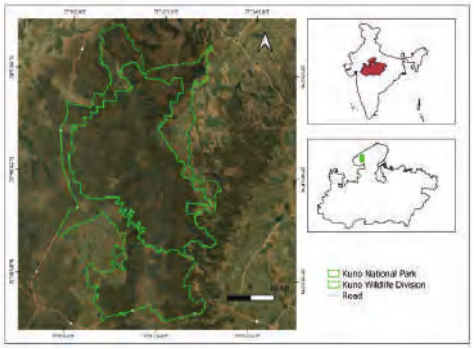

देश में पुनर्वास हेतु 06 संभावित स्थलों में से मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान का चयन किया गया एवं Maximum Entropy Eco-climatic model में कूनो राष्ट्रीय उद्यान चीता पुनर्वास हेतु सर्वश्रेष्ठ पाया गया। कूनो राष्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 748.862 वर्ग कि.मी. एवं बफर जोन 557.278 वर्ग कि.मी., कुल क्षेत्रफल 1306.140 वर्ग कि.मी. है।

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों के सॉफ्ट रिलीज के लिये लगभग 550 हेक्टेयर क्षेत्र में सौर ऊर्जा से चलित विद्युत बाड़ा बनाया गया है, जिसमें 09 कम्पार्टमेंट हैं। भारतीय कानून के अनुसार किसी भी जीवित वन्य प्राणी को किसी दूसरे देश से भारत में लाने पर एक माह हेतु क्वारेंटाइन किया जाना अनिवार्य है। इसको देखते हुये 06 क्वारेंटाइन बोमा का निर्माण किया गया है। दो क्वारेंटाइन बोमा का साइज 50 मी. x 30 मी. है एवं शेष 04 क्वारेंटाइन बोमा का साइज 25 मी. x 25 मी. है।

नामीबिया से सहमति पत्र पर हस्ताक्षर के पश्चात् नामीबिया से चीतों को लाकर दिनांक 17.09.2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर-कमलों से कूनो राष्ट्रीय उद्यान में छोड़ने का निर्णय लिया गया। लगभग 08 बजे ग्वालियर में वायुसेना के हवाई अड्डे पर उतरे। जहां से 02 एम.आई. हेलिकॉप्टर एवं 01 चिनुक हेलीकॉप्टर से उन्हें प्रात: लगभग 10 बजे कूनो पालपुर लाया गया। सभी चीते 12 घण्टे से अधिक के हवाई सफर में सुरक्षित रहे। तत्पश्चात् माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रात: 11:30 बजे तीन चीतों को क्वारेंटाइन बोमा में छोड़ा गया।

इस ऐतिहासिक पल को समस्त देशवासियों एवं चीता प्रेमियों द्वारा टी.बी. के माध्यम से देखा गया। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा चीता छोड़ने के पश्चात् चीता मित्रों से भी संवाद किया। सभी चीते स्वस्थ एवं सुरक्षित हैं। एक माह के क्वारेंटाइन बोमा में रहने के पश्चात् सभी चीतों को खुले विचरण हेतु बड़े बाड़े में छोड़ा जायेगा।

औषधीय पौधों के उपयोग के माध्यम से मानव स्वास्थ्य सुरक्षा

चिरकाल से ही भारत एवं अन्य देशों ने औषधीय पौधों का उपयोग कर कई भीषण रोगों का निवारण किया है। प्राचीन यूनानी पांडुलिपियों मिस्र के पपीरस और चीनी लेखन में भी जड़ी बूटियों के उपयोग का वर्णन है। अब यह प्रमाणित हो गया है कि यूनानी हकीम, भारतीय वैद्य और यूरोपीय और भूमध्य सागरीय संस्कृतियों ने अपने उपचार अनुष्ठानों में जड़ी-बूटियों का उपयोग किया, जबकि अन्य विकसित पारम्परिक चिकित्या प्रणालियों जैसे यूनानी, आयुर्वेद और चीनी चिकित्सा में हर्बल उत्पादों का व्यवस्थित रूप से उपयोग किया जाता है। महर्षि चरक से लेकर शल्य चिकित्सक महर्षि सुश्रुत तक ने भी अपनी चिकित्सा पद्धति में वनोपज संपदा का प्रयोग किया है। प्राचीन विद्वानों और वैद्यों का भी यह मानना था कि जड़ी-बूटियां स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याओं और बीमारियों को ठीक करने का एकमात्र समाधान है। उन्होंने इस विषय पर गहन अध्यन कर, औषधीय मूल्य वाले विभिन्न जड़ी-बूटियों की प्रभावकारिता के बारे में सटीक निष्कर्ष लेने के लिये कई प्रयोग किये। इस प्रकार तैयार की गई अधिकांश दवाएं दुष्प्रभावों या प्रतिक्रियाओं से मुक्त हैं।

चिकित्सा की पारंपरिक प्रणालियों का अब व्यापक रूप से अभ्यास किया जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि दवाओं की अपर्याप्त आपूर्ति उपचार की

निषेधात्मक लागत, कई सिंथैटिक दवाओं के दुष्प्रभावों और संक्रामक रोगों के उपचार हेतु वर्तमान में उपयोग की जाने वाली दवाओं के प्रतिरोध विकसित होने के कारण औषधीय पौधों का उपयोग वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति में किया जाने लगा है। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमान लगाया कि दुनियाभर में 80 प्रतिशत लोग अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के कुछ पहलू के लिये हर्बल दवाओं पर भरोसा करते है। डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार लगभग 21 हजार पौधों की प्रजातियों में औषधीय पौधों के रूप में उपयोग किये जाने की क्षमता है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार दुनिया की तीन-चौथाई से अधिक आबादी अपनी स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के लिये मुख्य रूप से पौधों के अर्क पर निर्भर है।

भारत की तरह ही म.प्र. में अपने विविध भौतिक क्षेत्रों और विविध वन प्रकारों के साथ औषधीय जड़ी-बूटियों का एक बहुत समृद्ध भण्डार माना जाता है। प्रदेश में औषधीय पौधों की बड़े स्तर पर खेती और उससे उपज भी होती है। वर्ष 2014 में किये गये एक शोध में पाया गया कि म.प्र. औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती के तहत देश का तीसरा सबसे बड़ा प्रदेश है। राज्य 72900 हेक्टेयर भूमि पर औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती कर 502070 टन का वार्षिक उत्पादन कर रहा है। राज्य में लगभग 20 प्रतिशत NTFP संग्रहकर्ता औषधीय पौधों के संग्रहण में शामिल

हैं। 4 लाख लोग (जिनमें अनुसूचित जनजाति की 50 प्रतिशत आबादी भी शामिल है) अपने जीवन यापन के लिये औषधीय पौधों पर निर्भर है। राज्य में औषधीय पौधों का संग्रहण 20000 टन है, जबकि संग्रहण मूल्य 32 करोड़ है। राज्य सरकार द्वारा स्थापित कृषि उपज मंडियों के माध्यम से इन औषधीय पौधों का व्यापार भी हो रहा है। प्रदेश की नीमच मंडी अश्वगंधा, इसबगोल और मेहंदी के पौधों का व्यापार कर विश्व प्रख्यात हो गई है। व्यापार की व्यापकता और इन औषधीय पौधों पर ग्रामीण आजीविका की निर्भरता को ध्यान में रखते हुए, राज्य सरकार और म.प्र. लघु वनोपज (व्यापार और विकास) सहकारी संघ मर्यादित ने समय-समय पर औषधीय पौधों की मूल्य श्रृंखला के हित धारकों का समर्थन करने हेतु कई पहल किये हैं, जिनमें कई औषधीय प्रजातियों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य भी शामिल है। लघु वनोपज संघ द्वारा आयोजित मेले और संगोष्ठियों के माध्यम से हितग्राहियों के लाभ हेतु निरंतर प्रयास किया जा रहा है। हाल ही में लघु वनोपज प्रसंस्करण और अनुसंधान केन्द्र (एम.एफ.पी.) पार्क द्वारा औषधीय पौधों के उपयोग के माध्यम से **'मानव स्वास्थ्य को सुरक्षित करना'** विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी

का आयोजन किया गया था। इस संगोष्ठी में कई राज्यों के प्रख्यात वैज्ञानिकों, आयुर्वेद चिकित्यकों और विषय विशेषज्ञों ने औषधीय पौधों के प्रबंधन संरक्षण और विकास पर गहन परिचर्चा की थी। संसाधनों के सतत् प्रबंधन के साथ-साथ मूल्य श्रृंखला में भी विभिन्न हितधारकों के बीच सद्भाव सुनिश्चित करने के लिये इस तरह के निरंतर संवाद महत्वपूर्ण है।

मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ सहकारी मर्यादित भोपाल द्वारा दिनांक 03 एवं 04 सितम्बर 2020 को आर.सी.व्ही.पी. नरोन्हा प्रशासन अकादमी, शाहपुरा भोपाल में आयोजित औषधीय पौधों के उपयोग के माध्यम से मानव स्वास्थ्य सुरक्षा संगोष्ठी में भाग लिया गया। इस अवसर पर जारी सोविनियर में डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन सरक्षक एवं सदस्य सचिव, द्वारा **Conservation and sustainable used of tradable bio-resources in context of Biological Diversity Act, 2002 विषय पर पेपर प्रकाशित किया गया। इस विषय पर प्रस्तुतिकरण के लिए डॉ. एलिजाबेथ थॉमस, सहायक सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।**

संगोष्ठी के अवसर पर बोर्ड द्वारा जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सहयोग से जैवविविधता प्रदर्शनी (स्टॉल) में विलुप्त प्राय: संकटापन्न देशी प्रजातियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें औषधीय आधारित कृषि, उद्यानिकी आधारित फसलों की बीज तथा फलों एवं वानिकी क्षेत्र की विलुप्त प्राय: एवं संकटापन्न प्रजातियों तथा जैवसंसाधनों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया।

बोर्ड द्वारा आयोजित स्टॉल में संगोष्ठी के मुख्य अतिथि आचार्य श्री बालकृष्ण, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार, डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री वन मध्यप्रदेश शासन, श्री राम किशोर कांवरे, राज्यमंत्री, आयुष (स्वतंत्र प्रभार) जल संसाधन मध्यप्रदेश, श्री अशोक बर्णवाल प्रमुख सचिव, वन विभाग, मध्यप्रदेश शासन एवं श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश द्वारा बोर्ड की प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया।

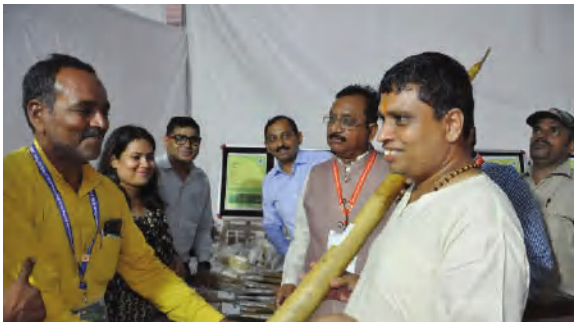

संगोष्ठी के अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा आयोजित प्रदर्शनी स्टॉल में दिनांक 03 एवं 04 सितम्बर को आचार्य श्री बालकृष्ण, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार, डॉ. कुंवर विजय शाह, माननीय मंत्री वन मध्यप्रदेश शासन, श्री राम किशोर कांवरे, राज्यमंत्री, आयुष (स्वतंत्र प्रभार) जल संसाधन मध्यप्रदेश शासन द्वारा बोर्ड की प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया।

मोगली लेण्ड (पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी) में बघीरा (काला तेन्दुआ) की चहल कदमी

स्थान- खवासा (बफर), पेंच टाइगर रिजर्व सिवनी (म.प्र.)

मोगली लेण्ड के नाम से विख्यात पेंच नेशनल पार्क में पूर्व में दिनांक 17 सितम्बर 2020 को पहली बार गश्त के दौरान स्टॉफ को काला तेन्दुआ दिखाई दिया था। स्टॉफ द्वारा लगातार काले तेन्दुए की निगरानी की जा रही थी। यह नर काला तेन्दुआ खवासा (बफर) के जंगलों में पर्यटकों को कई बार दिखा जिससे पर्यटक रोमांचित हुये।

दिनांक 31 दिसम्बर 2021 को सायंकाल की सफारी के दौरान एक पर्यटक (गौरव वासू, कोलकाता) को पुन: एक मादा तेन्दुआ अपने दो शावकों के साथ दिखी, जिसमें एक शावक काला था। ये दोनों शावक मादा तेन्दुए के साथ कई बार गश्त के दौरान स्टॉफ को दिखे। अब यह काला तेन्दुआ लगभग 09 से 10 माह का हो चुका है जिसका दर्शन पर्यटकों को विगत् कुछ दिनों से लगातार हो रहा है। इस काले तेन्दुए को देखने के लिए देश के कोने-कोने से पर्यटक आ रहे हैं। वन्यप्राणी प्रेमियों के लिए ये अत्यंत हर्ष की बात है कि अब पेंच नेशनल पार्क में एक नहीं दो काले तेन्दुए के दर्शन हो रहे हैं जिसकों लेकर पर्यटक अत्यंत उत्साहित हैं। पार्क प्रबंधन द्वारा लगातार काले तेन्दुए की मॉनीटरिंग की

जा रही है। हाल ही में परिक्षेत्र अधिकारी खवासा (बफर) को गश्त के दौरान काले तेन्दुए का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ है जिसमें इनके द्वारा काले तेन्दुए के नर होने की पुष्टि की गई।

अंकुर अभियान एवं हर घर तिरंगा अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, वन मण्डल, गुना

दिनांक 03.08.2022 को प्रात: 10:00 बजे अंकुर अभियान एवं हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत गुना वन मण्डल के वन परिक्षेत्र गुना दक्षिण के वन कक्ष क्रमांक/502 में वृक्षारोपण कार्य का आयोजन किया गया, जिसके प्रारंभ में गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा मंत्रोचार किया गया। तत्पश्चात मान. श्री गोपीलाल जी जाटव, विधायक, गुना, जिला कलेक्टर श्री फ्रेंक नोबल ए. (भा.प्र.से) श्री पंकज श्रीवास्तव (भा.पु.से.) पुलिस अधीक्षक गुना, श्री विवेक रघुवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत गुना एवं जिला स्तर के समस्त विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं गायत्री परिवार के सदस्यों तथा स्थानीय ग्रामीणों सहित लगभग 500 लोगों द्वारा 1000 पौधों का वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न किया गया।

माननीय विधायक श्री गोपीलाल जी जाटव एवं जिला कलेक्टर श्री फ्रेंक नोबल ए. द्वारा मौके से ही व्ही.डी.ओ. कान्फेंस के द्वारा माननीय मुख्यमंत्रीजी, मध्यप्रदेश शासन के कार्यक्रम के बावत अवगत कराया तथा आवश्यक जानकारियां दी गईं एवं पौधा रोपण कार्य संपन्न किया गया। उक्त कार्यक्रम बावत माननीय विधायक महोदय, गुना एवं जिला कलेक्टर द्वारा समस्त अतिथियों को अंकुर अभियान एवं हर घर तिरंगा अभियान बावत जागरूक किया गया। कार्यक्रम के समापन पर आभार प्रदर्शन मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, गुना द्वारा किया गया।

वन शहीदों कों श्रद्धांजलि, राष्ट्रीय वन शहीद दिवस 11 सितम्बर, 2022

वन शहीद कर्मियों के आश्रित सदस्यों को एक-एक लाख रूपए की सहायता

प्रदेश में वन एवं वन्य-प्राणी सुरक्षा कार्य में आरोपियों के साथ हुई मुठभेड़, वन्य-प्राणियों का हमला, अग्नि दुर्घटना जैसी विषम परिस्थितियों में जान गंवाने वाले वन विभाग के 4 वन शहीद कर्मियों के आश्रित सदस्यों को एक-एक लाख रुपए और प्रशस्ति-पत्र राष्ट्रीय वन शहीद दिवस के मौके पर दिए गए। भोपाल के चार इमली स्थित फारेस्ट रेस्टहाउस परिसर में हुए राष्ट्रीय वन शहीद दिवस पर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक श्री अभय कुमार पाटिल ने आर्थिक सहायता और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।

वन विभाग द्वारा प्रति वर्ष 11 सितम्बर को राष्ट्रीय वन शहीद दिवस मनाया जाता है। विगत एक वर्ष के दौरान वन विभाग के शहीद हुए वनकर्मियों को आर्थिक सहायता और प्रशस्ति-पत्र मध्यप्रदेश टाइगर फाउन्डेशन सोसायटी के **'क्लोज टू माई हार्ट'** अभियान से दिया जाता है।

जाँबाज शहीद वन कर्मी

कान्हा टाइगर रिजर्व में दैनिक वेतनभोगी श्रमिक और स्थाई कर्मी के रूप में पदस्थ रहे श्री समरत सिंह मरावी की ड्यूटी के दौरान हाथी द्वारा आक्रमण किए जाने से मृत्यु हो गई थी।

कान्हा टाइगर रिजर्व में ही आकस्मिक निधि के श्रमिक श्री सुखदेव परस्ते की 23 मार्च 22 को मुक्की परिक्षेत्र के परसाटोला समनापुर वन मार्ग पर ड्यूटी के दौरान बामपंथी, चरमपंथियों द्वारा गोली मारने से मृत्यु हो गई थी।

दक्षिण सिवनी मण्डल में वनरक्षक श्री गणेश प्रसाद सनोडिया की आमागढ़ चंदन गोदाम के समीप रेत के डम्फर चालक द्वारा लापरवाहीपूर्वक तेज गति से टक्कर मारने से मृत्यु हो गई थी।

इसी तरह पन्ना टाइगर रिजर्व में स्थाई कर्मी महावत श्री बुधराम रौतिया की हाथी द्वारा टक्कर मारने से मृत्यु हो गई थी।

वनकर्मी शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

वन विभाग के इन 4 जाँबाज शहीद वनकर्मियों के सम्मान में 2 मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान प्रधान मुख्य वन संरक्षक (संरक्षण) श्री सी.के. पाटिल, राज्य लघुवनोपज संघ प्रबंध संचालक श्री पुष्करसिंह, सहित अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

अहमदपुर रोपणी, भोपाल

बड़गोंदा रोपणी, इन्दौर

आशापुर रोपणी, खण्डवा

बांसापुरा रोपणी, भोपाल

अनुसंधान एवं विस्तार वर्तमान परिदृश्य एवं भविष्य की रणनीति

अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी

परिचय

सुदृढ़ पौध द्वारा वनों की उत्पादकता वृद्धि, सामुदायिक एवं निजी भूमि पर पौध रोपण तथा वानिकी विस्तार हेतु प्रत्येक कृषि जलवायु प्रक्षेत्र में क्रमश: बैतूल, भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, झाबुआ, खंडवा, रतलाम, रीवा, सागर एवं सिवनी में अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त की रोपणियाँ स्थापित हैं।

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त के अंतर्गत स्थित रोपणियों में ज्ञात बीज स्त्रोत द्वारा मानक गुणवत्ता के वानिकी/ फलदार/औषधीय/ लघुवनोपज संकटापन्न/ विलुप्तप्राय एवं आवश्यकतानुसार क्लोनल/ग्रांटेड पौधे तैयार कर विभागीय वृक्षारोपण, शासकीय/अशासकीय विभागों, संस्थाओं एवं जनसामान्य को रोपण हेतु प्रदाय किये जाते हैं। पौध तैयारी के साथ-साथ वनों के महत्व एवं पारिस्थितिकीय सेवाओं के प्रचार-प्रसार, वन एवं पर्यावरण के विषय पर जागरूकता, कृषि वानिकी को बढ़ावा देने का कार्य किया जाता है।

प्रमुख कार्य

- मानक आकार के निर्धारित पद्धति द्वारा उत्कृष्ट पौध तैयार करना
- उच्च गुणवत्ता के ज्ञात स्त्रोतों से वन समिति/स्थानीय व्यक्तियों द्वारा बीज संग्रहण
- रोपणी संबंधित व्यवहारिक अनुसंधान एवं क्रियान्वयन
- जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशक का उत्पादन एवं उपयोग

- वानिकी विषयों पर प्रशिक्षण, भ्रमण एवं स्थानीय समन्वय
- रोपणी अधोसंरचना विकास एवं आधुनिकीकरण
  - नई तकनीकों का उपयोग कर जल उपयोग में कमी
  - ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों का उपयोग कर ऊर्जा खपत में बचत
- मॉनीटरिंग, रिपोर्टिंग एवं अभिलेखीकरण
- विस्तार कार्यक्रम
- नवाचार।

उच्च गुणवत्ता एवं मानक आकार के पौधों की तैयारी

- लघु वनोपज प्रजातियाँ
- दुर्लभ एवं संकटापन्न प्रजातियाँ
- प्रमुख काष्ठ प्रजातियाँ
- औषधीय प्रजातियाँ
- बड़ प्रजातियाँ
- फलदार प्रजातियाँ
- छायादार-शोभायमान प्रजातियाँ
- बड़े आकार के पौध तैयारी
- टिश्यू कल्चर से पौध तैयारी
- स्थानीय मांग अनुसार विशिष्ट प्रजाति।

उच्च गुणवत्ता के ज्ञात स्त्रोतों से बीज संग्रहण

- बीज स्त्रोतों की पहचान एवं संसाधन मानचित्रीकरण
- बीज संग्रहण एवं भण्डारण व्यवस्था
- बीज उपचार एवं बीज अंकुरण
- बीज उत्पादन क्षेत्रों का प्रबंधन एवं बीज संग्रहण
- RET एवं NTFP प्रजाति हेतु बीज उत्पादन क्षेत्रों की पहचान, स्थापना एवं रखरखाव
- सागौन, अचार, बीजा, अंजन, हल्दू, शीशम आदि के नये बीज उत्पादन क्षेत्र का चयन एवं बीज संग्रहण
- उच्च गुणवत्ता के स्थानीय एवं स्वस्थ वृक्षों से बीज संग्रहण
- बीज संग्रहण, गोदामीकरण, रखरखाव, प्रमाणीकरण एवं अभिलेखीकरण
- बीज संग्रहण दर का क्षेत्रीय स्तर पर निर्धारण
- बीज संग्रहण में वन समिति एवं स्थानीय लोगों की भागीदारी।

जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशक का उत्पादन एवं उपयोग

- वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन एवं उपयोग
- नीम खली एवं तेल का उत्पादन एवं उपयोग
- पौध तैयारी में माईक्रोब्स का उपयोग
- बायो डायजेस्टर का उपयोग
- जीवामृत/बीजामृत आदि का उत्पादन एवं उपयोग
- माइकोराईजा का उपयोग
- कोकोपिट एवं अन्य जैविक पदार्थों का उपभोग।

वानिकी विषयों पर प्रशिक्षण, भ्रमण एवं समन्वय

- रोपणी को जैवविविधता केन्द्र का स्वरूप
- प्रमुख संस्थानों का भ्रमण
- विषय विशेषज्ञों द्वारा कर्मचारियों एवं ग्रामीणों को प्रशिक्षण
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (SFRI, TFRI)

- कृषि विज्ञान केन्द्र
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय
- भारतीय वन प्रबंधन संस्थान
- विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण
- प्रदेश एवं देश के प्रमुख संस्थानों का भ्रमण
- कौशल उन्नयन/दक्षता विकास/वन समितियों की रोपणी कार्य में भागीदारी।

रोपणी अधोसंरचना विकास एवं आधुनिकीकरण

- माइक्रोफौगर एवं अन्य आधुनिक सिंचाई व्यवस्था की स्थापना
- मिस्ट चैम्बर, पॉलिहाउस, पॉली प्रोपोगेटर, ग्रीननेट व्यवस्था, रूट ट्रेनर
- वर्मी कम्पोस्ट अधोसंरचना विकास
- बीज उपचार प्लेटफार्म
- आधुनिक बीज भण्डारण सुविधा
- श्रमिक हेतु सुविधाएं - पेयजल, प्रसाधन, शेड आदि
- कर्मचारियों हेतु रोपणी में सुविधाएं
- रोपणी सुरक्षा व्यवस्था
- रोपण आवागमन सुविधा
- रोपणी सूचना केन्द्र एवं आगन्तुक हेतु सुविधाएं
- सौर ऊर्जा का उपयोग
- महत्वपूर्ण प्रजाति के मातृवृक्षों की स्थापना
- रोपणी में बडिंग, ग्राटिंग की व्यवस्था
- कोकोपिट ग्राइंडर
- पौधा कंटेनर हेतु पॉलिथीन के विकल्प के प्रयास
- रूट ट्रेनर का उपयोग।

मॉनीटरिंग, रिपोर्टिंग एवं अभिलेखीकरण

- रोपणी सूचना प्रबंधन प्रणाली
- सी.सी.टी.व्ही. कैमरा
- बैठक
- ड्रोन फोटोग्राफी
- निरीक्षण
- रोपणी कार्यों हेतु सामयिक चार्ट
- रोपणी संबंधित समस्त अभिलेखों, कार्यों, प्रयोगों एवं उनके प्रभावों का अभिलेखीकरण।

विस्तार कार्यक्रम

- वनांचल संदेश पत्रिका
- मीडिया रिपोर्टिंग
- जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क, सम्मलेन-स्थानीय स्तर पर रोपणियों में सम्मेलन, वर्कशॉप, सेमिनार आदि
- वनदूत
- कृषि वानिकी
- यू-ट्यूब, ट्वीटर, फेसबुक, इन्स्टाग्राम, कौशल उन्नयन, सोशल मीडिया का उपयोग
- स्थानीय स्तर पर प्रचार सामग्री का विकास एवं वितरण
- आम लोगों के लिए अनुसंधान एवं विस्तार रोपणियों के पौधों की जानकारी की एम.पी.ऑनलाइन व्यवस्था
- चयनित रोपणियों में रोपणी पर्यटन द्वारा जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार
- रोपणियों को बहुआयामी स्वरूप देना
- विभिन्न विभागों से समन्वय
- ग्राफ्टेड पौधों की व्यवस्था
- RET प्रजातियों के मातृ वृक्षों की स्थापना।

नवाचार

- CCTV द्वारा अनुश्रवण एवं मूल्यांकन
- रोपणी छायांकन हेतु ड्रोन कैमरे द्वारा
- रोपणी पर्यटन
- पौध तैयारी में माइक्रोब्स का उपयोग
- अग्रिम पौध तैयारी - बजट आवंटन, बीज व्यवस्था एवं रोपण
- रोपणी सूचना प्रबंधन प्रणाली (NMIS)
- रोपणी में योग
- रोपणी में मधुमक्खी पालन
- मियाबॉकी रोपण
- व्हाट्सएप ग्रुप - म.प्र. अनुसंधान एवं विस्तार
- रोपणियों में प्रसाधन एवं पेयजल व्यवस्था
- बड़ प्रजाति, अचार, कुसुम, महुआ, बेल, खम्हार, बेर, जामुन आदि वन्य प्राणियों हेतु उपयोगी प्रजातियों का प्रदाय
- हाईड्रोपोनिक्स पद्धति का उपयोग कर पौध तैयारी
- सीड एवं सीडलिंग सर्टिफिकेशन एक्ट एवं रूल्स
- समस्त रोपणियों के लिए वार्षिक एक्शन प्लान तैयार करना
- एक्शन प्लॉन अनुसार बजट प्रावधान
- सीड बॉल निर्माण एवं रोपण
- दुर्लभ एवं संकटापन्न (RET) प्रजातियाँ
- 30 बड़ प्रजातियों की पहचान, तैयारी एवं स्थापना
- सागौन के स्ट्रेन, माचना, तैलिया सागौन क्षेत्र की पहचान, बीज संग्रहण, एवम् पौधा तैयारी
- वन समितियों का बीज संग्रहण कार्य में नियोजन
- रोपणियों को वानिकी कार्यों, जैव विविधता एवं वानिकी विषयों पर ज्ञान केन्द्र के रूप में विकसित करना
- रोपणी को जैवविविधता केन्द्र का स्वरूप।

वनभोज रसोई का शुभारंभ

वनधन विकास केंद्र मैनावाड़ी, परिक्षेत्र परासिया, जिला यूनियन पश्चिम वनमण्डल छिंदवाड़ा

वनधन विकास केन्द्र मैनावाड़ी के द्वारा वर्ष 2020-21 निम्नानुसार लघु वनोपजों का क्रय/विक्रय किया गया है।

क्र.	वनोपज का संग्रहण				वनोपज का निर्वतन				शुद्ध लाभ की राशि
	नाम	क्रय दर	संग्रहित मात्रा	भुगतान राशि	नाम	विक्रय दर	विक्रित मात्रा	प्राप्त मात्रा	
1.	बालहर्रा	2300/-	23qt	52900/-	बालहर्रा	2800/- per qt	23qt	64400/-	11500/-
2.	हर्रा छाल	3600/-	10qt	36000/-	हर्रा छाल	4000/- per qt	10qt	40000/-	4000/-
कुल-				88900				104400	15500

वनधन विकास केन्द्र के छिन्दवाड़ा मटकुली मार्ग पर स्थापित होने के कारण समूह की महिलाओं द्वारा उक्त वनधन विकास केन्द्र में वन उपज के व्यापार एवं मूल्य संवर्धन के साथ-साथ वनोपज तथा वनांचल से प्राप्त जैविक संसाधनों का उपयोग कर रसोई चलाने की मंशा जाहिर की गई। तदानुसार वनधन विकास केन्द्र की स्थापना हेतु प्राप्त राशि से आवश्यक संसाधन प्रदाय किए गये हैं।

उक्त रसोई का वनभोज रसोई के नाम से शुभारंभ दिनांक 12.05.2022 को प्रधान मुख्य वनसंरक्षक तथा प्रबंध सचांलक मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ भोपाल श्री पुष्कर सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया। साथ ही वनधन विकास केन्द्र के उत्पादों तथा विंध्य हर्बल के उत्पादों हेतु एक स्टॉल भी स्थापित किया गया है जिसके माध्यम से वनधन विकास केन्द्र एवं विंध्य हर्बल उत्पादों का विक्रय किया जा रहा है।

उक्त रसोई के माध्यम से निम्नानुसार जलपान, स्वल्पाहार एवं भोजन आदि की व्यवस्था की गई है।

रोटी - बाजरा, मक्का, ज्वार, गेहूँ तवा, गेहूँ तंदूरी, बटर रोटी

सब्जी -आलू छोले, मशरूम, बटर मसाला, बटर मशरूम, मशरूम पनीर, आलू जीरा, गोभी मिक्स, सेव टमाटर

हरी सब्जी - केवलारी भाजी, मैथी, पालक, बथुआ, मिक्स वेज, भिण्डी मसाला

पनीर - पनीर मसाला, मटर पनीर, बटर पनीर, शाही पनीर, कढ़ाई पनीर, पालक पनीर

दाल - दाल तड़का, दाल फ्राई, दाल मसाला

खिचड़ी - वेज बिरयानी, कश्मीरी पुलाव, सादी खिचड़ी,

चावल - जीरा चावल, समा चावल, कुटकी चावल, कोदो चावल

आचार - आम का अचार, आंवला अचार, मिक्स अचार

लड्डू - महुआ, चिरोंजी, मिलमा

रायता- दही , सादा, बूंदी, लौकी

बाटी - सादी बाटी, मसाला बाटी, मिक्स बाटी

अन्य - भरता, छोले भटूरे, आलू पराठा

पेय पदार्थ - सादी चाय, ग्रीन चाय, जिंजर चाय आदि।

वनधन विकास केन्द्र मैनावाड़ी (सोनापीपरी) से इमली, शहद, कोदो, कुटकी, समा, आर्गेनिक चावल, आंवला केन्डी, आमचूर, आंवला अचार, जैविक मक्का, आचार बीज इत्यादि वनोपजों का पैकेजिंग कर विक्रय भी किया जा रहा है।

वनभोज रसोई के संचालन से निम्नानुसार शुद्ध लाभ प्राप्त किया गया है।

क्र	माह	शुद्ध लाभ की राशि
1.	मई 2022	24000
2.	जून 2022	14000
3.	जुलाई 2022	28000
4.	अगस्त 2022 निरंतर	17000
योग-		**83000**

वनभोज रसोई के लोगों के द्वारा अत्यंत कम समय में ही अच्छा प्रतिसाद मिल हैं। साथ ही वनधन विकास केन्द्र द्वारा वनभोज रसोई के प्रचार प्रसार हेतु भी भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। स्वतंत्रता दिवस पर पुलिस ग्राउंड छिन्दवाड़ा में

आयोजित ईट राईट मेले में स्टॉल लगाया गया जहां पर आम नागरिकों के साथ ही जनप्रतिनिधियों द्वारा भी वनभोज रसोई के व्यंजनों के स्वाद का लाभ उठाया गया।

कृषि मंत्री एवं प्रभारी मंत्री छिन्दवाड़ा मान. श्री कमल पटेल जी द्वारा भी उक्त कार्यक्रम की सरहाना की गई तथा समूह की महिलाओं को शुभकामनांए दी गईं।

दिनांक 19.08.2022 को केन्द्रीय मंत्री पंचायती राज और ग्रामीण विकास, श्री गिरीराज सिंह, राज्यसभा सांसद कविता पाटीदार, कृषि मंत्री तथा प्रभारी मंत्री छिन्दवाड़ा श्री कमल पटेल द्वारा वनधन विकास केन्द्र मैनावाड़ी द्वारा संचालित वनभोज रसोई का निरीक्षण किया गया, समूह की महिलाओं से चर्चा की गई एवं तत्पश्चात वनभोज रसोई के उत्पादों का स्वाद लिया गया।

समूह की अन्य महिलाओं का रुझान बढ़ाने के उद्देश्य से वनभोज रसोई से विगत तीन माह में अर्जित शुद्ध लाभ से एक समूह की 15 महिलाओं को 5-5 हजार रुपये लाभांश का वितरण भी माननीय मंत्री के द्वारा किया गया।

वन पुनर्स्थापन एवं आजीविका हेतु वन समिति तथा सी.एस.आर. के सहयोग से वन मंडल शहडोल की एक पहल

श्री गौरव चौधरी व.म.अ. उत्तर शहडोल, निर्देशन में श्री एल.एल. उईके मुख्य वनसंरक्षक शहडोल

वन पर्यावरण को स्थिरता प्रदान करते हैं। वे पारिस्थितिक तंत्र को विनियमित करते हैं, जैवविविधता की रक्षा करते हैं, कार्बन चक्र में एक अभिन्न भूमिका निभाते हैं। आजीविका का समर्थन करते हैं, और वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति करते हैं जो सतत विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। जलवायु परिवर्तन में वनों की भूमिका दोगनी है। वे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण और समाधान दोनों के रूप में कार्य करते हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को दूर करने के लिए वन भी सबसे महत्वपूर्ण समाधानों में से एक हैं।

उत्तर शहडोल वनमण्डल का क्षेत्र शहडोल जिले के उत्तरी भाग में स्थित है। क्षेत्र पहाड़ी एवं अधिकांशतः मैदानी है। वनमण्डल की सीमायें उत्तर में सोन नदी, पूर्व में बनास नदी, दक्षिण में चूंदी नदी एवं पश्चिम में सोन नदी सीमा बनाती है। कार्य आयोजना क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार 23° 36’ 24” से 24° 16’ 23” उत्तर अक्षांश एवं 81° 02’ 25” से 81° 41’ 29” पूर्व देशांतर के मध्य है।

उत्तर शहडोल वनमण्डल दो टाइगर रिज़र्व के बीच का कॉरिडोर क्षेत्र भी हैं। जिसमें पूरब की ओर संजय दुब्रि टाइगर रिज़र्व तथा पश्चिम की ओर

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व लगता है। विगत कई वर्षों से इस क्षेत्र में हाथी का आगमन भी हो रहा है।

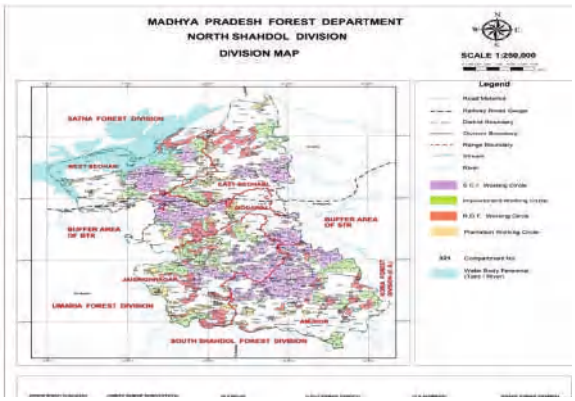

उत्तर शहडोल में वन्य प्राणी मुख्य रूप से बाघ और अब विशेषकर हाथी से मानव द्वन्द की स्थिति निर्मित हो रही है। इन परिस्थितियों में जंगल का विकास करना अत्यंत जरूरी है ताकि मानव वन्य प्राणी द्वन्द को कम करा जा सके। इसके लिए सबसे अच्छा उपाय वन क्षेत्र का विकास है। इसी प्रयास में दा कॉर्बेट फाउंडेशन के साथ बिगड़े वन क्षेत्र में वृक्षारोपण का कार्य करने की योजना बनायी गई। इस योजना में वन समिति मसीरा को जोड़ा गया। समिति अध्यक्ष श्री सतीश चतुर्वेदी की अध्यक्षता में समिति की लोगों से चर्चा की गई। बैठक के बाद वनमण्डल उत्तर शहडोल, दा कॉर्बेट फाउंडेशन एवं वन समिति मसीरा के बीच एक त्रिपक्षीय अनुबंध बना। इसमें दा कॉर्बेट फाउंडेशन

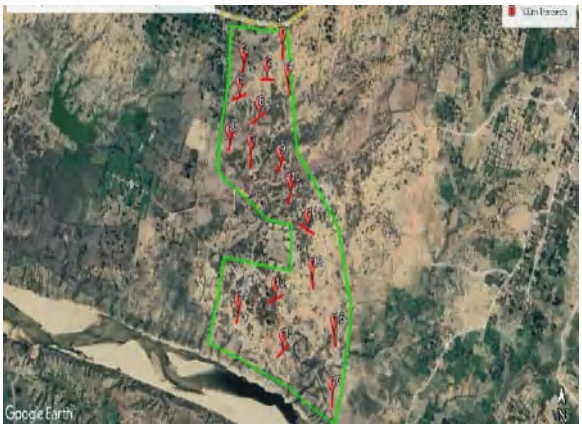

कार्य क्षेत्र का सेटेलाइट चित्र

5 वर्ष तक पूरे वृक्षरोपण परियोजना को आर्थिक रूप से सी.एस.आर. के तहत अनुदान देगा। इस अनुबंध के अनुसार जयसिंह नगर परिक्षेत्र की बीट मसीरा के कंपार्टमेंट पी.385, पी.386 एवं पी.387 में 100 हे. बिगड़े वन क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य इस वर्ष कराया गया है। मुख्य गतिविधियाँ निम्न अनुसार हैं।

वनीकरण के लिए उपयुक्त स्थलों की पहचान

इसके लिए ऐसे क्षेत्र का चयन करा गया जो वन्य प्राणी की उपस्थिति को लेकर संवेदनशील है। लैंटाना कैमरा सबसे आम आक्रामक और विदेशी खरपतवार है जिसने मध्य भारत के अधिकांश जंगलों को अपने कब्जे में ले लिया है। ईंधन लकड़ी संग्रह और अन्य घरेलू उपयोगों और पशुओं के चरने के लिए पेड़ की कटाई के कारण कोई भी गिरावट इस खरपतवार के विकास और प्रसार को सुविधाजनक बनाती है। लैंटाना को प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले जमीनी वनस्पतियों को नष्ट करके जंगलों को घेरते हुए देखा जा सकता है।

इस प्रकार, पहचाने गए स्थल से लैंटाना को साफ करना आवास बहाली का एक महत्वपूर्ण पहलू था। कुछ विकिरणित लैंटाना का उपयोग ग्रामीणों द्वारा घर की बाड़ के रूप में किया गया है और बाकी को पुनर्विकास को रोकने के लिए जला दिया गया है। खरपतवारों के उन्मूलन के बाद, साइट की परिधि के साथ-साथ चार फीट की चेन लिंक बाड़ लगाई गई है ।

स्थलों की फेंसिंग के बाद मई में गड्ढे खोदे गए। अधिकांश पौधे वन विभाग की नर्सरी से खरीदे गए थे और मानसून की शुरुआत में लगाए गए थे। पौधे लगाने से पहले गड्ढों में गोबर की खाद और मिट्टी डाली गयी। पौधरोपण के बाद, स्थानीय ग्रामीणों को टीसीएफतथा वन विभाग के द्वारा वृक्षारोपण स्थलों की सुरक्षा और रखरखाव और गर्मियों के दौरान पौधों को समय पर पानी देना सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया गया है।

क्षेत्र में मौजूद वनस्पति का पूर्व सर्वेक्षण

Vegetation variety recorded

Sr. No	Vegetation	Scientific names
1	Tendu	*Diospyros melanoxylon*
2	Bamboo	*Bambusa vulgaris*
3	Lantana	*Lantana camara*
4	Lendiya	*Lagerstroemia parviflora*
5	Mahua	*Madhuca longifolia*
6	Neem	*Azadirachata indica*
7	Palash	*Butea monosperma*
8	Jamun	*Syzygium cumini*
9	Peepal	*Ficus religiosa*

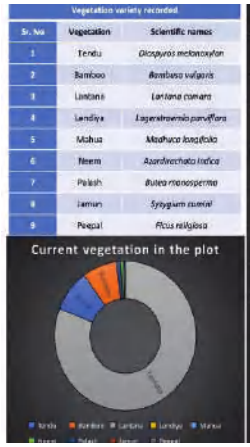

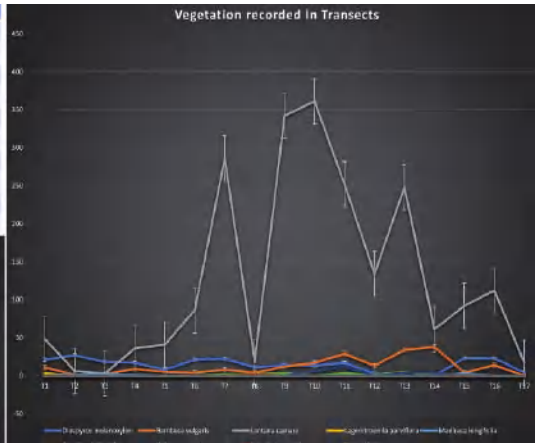

कार्य करने के पूर्व के चित्र

क्षेत्र में मौजूद वनस्पति का पूर्व सर्वेक्षण

क्षेत्र में करा गया सोलर पम्प हेतु बोरिंग

पौधा रोपण के चित्र

स्थानीय पेड़ों, झाड़ियों और घासों के पौधे रोपना

चयनित 100 हेक्टेयर वन भूमि गए कुल 75000 पौधे लगाए गए हैं। लगाए गए पौधे उन प्रजातियों के थे जो इन जंगलों में स्वाभाविक रूप से पाए जाते हैं और मध्य भारतीय परिदृश्य के मूल निवासी हैं। मौजूदा बड़े पेड़ों को बरकरार रखा गया है। वृक्षारोपण मिश्रित रूप से किया गया है,। इसलिए अंततः जब जंगल परिपक्व हो जाएगा, तो कोई एक मोनोकल्चर वृक्षारोपण के बजाय मिश्रित वन देखा जा सकता है। न केवल पेड़ और बांस बल्कि झाड़ियों और अन्य घासों को प्राकृतिक रूप से बढ़ने दिया जाएगा। फेन्सिंग से वृक्षारोपण में घास प्रचुर मात्रा में विकसित होगी जिससे स्थानीय समुदायों के पशुओं के लिए चारा भी उपलब्ध हो सकेगा। पौष्टिक और खाद्य घास और झाड़ियों की अनुपस्थिति के कारण, पशुधन प्राकृतिक जंगलों में चराई करते हैं और इस प्रकार धीरे-धीरे इनका भी क्षरण करते हैं। वन पुनर्स्थापन के अलावा, स्थानीय ग्रामीण भी इन पुनर्स्थापन स्थलों से घास की कटाई कर सकते हैं और अपने पशुओं की स्टाल-फीडिंग सुनिश्चित कर सकते हैं। वनीकरण कार्यक्रमों के लिए आवश्यक सभी श्रमिकों को वन विकास समितियों के माध्यम से गांवों से कार्य पर लिया गया है। इससे स्थानीय समुदायों के मिले रोजगार से वनों के संरक्षण में उनका समर्थन हासिल करने में मदद मिलेगी।

पुनर्स्थापन साइटों की सुरक्षा

चेन-लिंक्ड बाड़ का उपयोग करके पांच साल के लिए बहाल साइटों की बाड़ लगाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संरक्षण के अभाव में, पशु नए रोपित पौधों पर चरने लगेंगे और वृक्षारोपण की सफलता दर प्रभावित होगी। वनों के प्रबंधन में स्थानीय समुदायों को शामिल करने के लिए स्थानीय समुदायों के साथ नियमित बैठकें आयोजित की जाएँगी। बैठकों का उद्देश्य स्थानीय समुदायों के बीच वन संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देना और उन्हें वनीकरण स्थलों के प्रबंधन में शामिल करना है। आस-पास के गांवों से चौकीदार को काम पर रखा गया है ताकि वे क्षेत्रों में गश्त करें और यह सुनिश्चित करें कि किसी भी तरह के अतिचार को रोका जा सके।

सफलता और स्थिरता सुनिश्चित करना

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि लगाए गए पौधे अच्छी तरह से संरक्षित हैं, और वे फिर से "जंगल" में विकसित होने के लिए जीवित रहें। यह तभी संभव है जब पूरी प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय शामिल हों। स्थानीय समुदायों को पूरे कार्यक्रम में दीर्घकालिक आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक लाभ देखना चाहिए। वृक्षारोपण का कार्य एक वर्ष (मौसम) में समाप्त हो सकता है लेकिन वृक्षारोपण की निगरानी, रखरखाव और संरक्षण महत्वपूर्ण है और इसे निरंतर जारी रहना चाहिए।

एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत बांस सेक्टर के विकास के लिए स्टेकहोल्डर्स की कार्यशाला

मध्यप्रदेश में एक जिला एक उत्पाद योजना (ODOP) के अंतर्गत बांस के विकास हेतु देवास, हरदा एवं रीवा जिलों का चयन किया गया है। इस संबंध में मध्यप्रदेश राज्य बांस मिशन द्वारा इन जिलों में बांस क्षेत्र के विकास हेतु 20 जुलाई 2022 को भोपाल में खेल परिसर, 74 बंगला स्थित कमांड रूम में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बांस क्षेत्र से संबंधित विभिन्न सरकारी विभागों/संस्थानों, गैर सरकारी संस्थानों, बांस उद्यमियों, कृषकों एवं अन्य हितग्राहियों को साथ में लाकर विचारों का आदान-प्रदानकर ODOP जिलों में बांस क्षेत्र विकास हेतु रणनीति बनाना है।

श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव वन ने इस कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागियों को संबोधित कर कहा कि हमें बांस की पर्यावरण संरक्षण एवं रोज़गार सृजन की अद्भुत क्षमता का लाभ उठाते हुए

मध्यप्रदेश को भारत का बेम्बू कैपिटल बनाना है।

उन्होंने कहा की बांस क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास हेतु यह आवश्यक है की इसके विकास की धीमी गति के कारणों को चिन्हित कर उन्हें योजनाबद्ध प्रयास द्वारा दूर किया जावे। उन्होंने निर्देशित किया की ODOP योजना में सम्मिलित इन जिलों में बांस क्षेत्र विकास हेतु महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित कर उपलब्ध संसाधनों का भरपूर उपयोग

करते हुए कार्य किये जाएँ जो कि राज्य के अन्य जिलों के लिये आदर्श बन सकें।

श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश ने अपने उद्बोधन के दौरान निर्देशित किया की बांस की खेती को बिजनेस मॉडल के रूप में विकसित किया जाये।उन्होंने देवास, हरदा एवं रीवा की जिला पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों एवं वनमण्डल अधिकारियों से आग्रह किया कि वे जिलों में उपलब्ध बांस संसाधनों, बांस कृषकों, शिल्पियों, उद्यमियों आदि से चर्चा कर हितग्राही केन्द्रित रणनीति बनाएं। इसके अंतर्गत बांस क्षेत्र विकास हेतु व्यापार आधारित एवं समाज आधारित, दो तरह की एप्रोच होना चाहिए। उन्होंने श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव वन द्वारा बांस के विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए बताया की भारत से चारकोल के निर्यात पर से हटे प्रतिबन्ध का उल्लेख किया एवं उद्यमियों से इस अवसर का लाभ उठाने का आग्रह किया।

डॉ. उत्तम कुमार सुबुद्धि, मिशन संचालक, म.प्र. राज्य बांस मिशन द्वारा प्रतिभागियों का स्वागत कर उन्हें बताया गया कि इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य बांस क्षेत्र से जुड़े विभिन्न स्टेकहोल्डर्स के मध्य नेटवर्किंग स्थापित करना है। इन जिलों में समग्र बांस विकास हेतु "Complete value chain development approach" को अपनाया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत बांस वैल्यू चैन

के सभी चरणों से जुड़े हितग्राहियों - बांस के पौधे विकसित करने हेतु रोपणियां, बांस कृषक, बांस आधारित शिल्पी, बांस उपचार, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन उद्योग, आदि - की पहचान कर उनकी आवश्यकतानुसार नीति आधारित हस्तक्षेप कर इनके मध्य सीधे लिंकेज स्थापित किये जाए।

कार्यशाला में उपस्थित विभिन्न स्टेकहोल्डर्स ने अपने विभागों/संस्थानों की योजनाओं एवं बांस क्षेत्र से सम्बंधित कार्यों, एवं उनकी संभावित योगदान पर प्रस्तुतिकरण एवं निम्नानुसार सुझाव दिये –

- **श्री विश्वनाथन, प्रबंध संचालक, म.प्र. पर्यटन विकास निगम :** बांस उत्पादों के प्रचार-प्रसार हेतु अभिनव प्रयास किये जा सकते हैं जैसे:- ODOP जिलों में Bamboo craft villages का विकास, निगम की होटल्स से बांस souvenirs का प्रचार एवं पचमढ़ी हाट बाज़ार में बांस शिल्पियों की सह-भागिता।
- **डॉ. अभय कुमार पाटिल, प्रबंध संचालक, वन विकास निगम :** बांस में सागौन की तुलना में अधिक IRR होने से निगम द्वारा पर्याप्त सिंचाई व्यवस्था वाले क्षेत्रों में बांस रोपण किया जा सकता है।
- **डॉ. अर्चना शुक्ला, अपर प्रबंध संचालक, राज्य लघु वनोपज संघ :** संघ द्वारा बांस शिल्पियों के कौशल विकास में सहयोग प्रदान किया जा सकता है एवं वनधन केन्द्रों का बांस उत्पाद निर्माण एवं पैकेजिंग हेतु उपयोग किया जा सकता है।
- **श्री पी. नरहरि, सचिव, MSME :** मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना तथा फर्नीचर, खिलौने एवं अन्य वैल्यू

एडेड उत्पाद के लिए सरकार की नई नीति का बांस आधारित इकाइयों की स्थापना हेतु भी लाभ उठाया जा सकता है।

- **श्री ललित बेलवाल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, SRLM :** प्रदेश में बांस संसाधन के विस्तार के साथ-साथ रोज़गार आजीविका सृजन हेतु SRLM के अंतर्गत गठित स्व-सहायता समूहों द्वारा बांस रोपणियों की स्थापना एवं MNREGA के अंतर्गत पौध रोपण किया जाना चाहिए। आजीविका मिशन के अंतर्गत Community Resource Persons को वन विभाग द्वारा बांस प्रबंधन का प्रशिक्षण देकर कृषकों तक बांस खेती एवं प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
- **श्री अजय नियोडिंग, हेड, पौधरोपण एवं क्रय, अमलाई पेपर मिल :** कंपनी द्वारा बांस कृषकों से बांस क्रय हेतु एग्रीमेंट किये जा रहे हैं। कंपनी का आगामी 5 वर्षों में 1 लाख कृषकों के सहयोग से 1 लाख एकड़ में बांस पौध रोपण का लक्ष्य है।
- **श्रीमती जी.वी. रश्मि, प्रबंध संचालक, मंडी बोर्ड, राज्य आयोजक AIF, एवं CEO, AIG-GPA :** AIF योजना के अंतर्गत बांस के पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट

इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जा सकता है। ODOP जिलों में बांस वैल्यू चैन विश्लेषण हेतु AIGGPA द्वारा सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

- **श्री बृजेश स्वर्णकार, संचालक, KVIC :** विभाग की ग्रामोद्योग विकास योजना एवं KVIC-PMEGP योजना के अंतर्गत बांस आधारित मेन्युफैक्चरिंग इकाइयों की स्थापना की जा सकती है। विभाग द्वारा अगरबत्ती निर्माण इकाई हेतु पृथक से नीति विचाराधीन है। सामान्य सुविधा केन्द्रों की स्थापना हेतु सहयोग किया जा सकता है। प्रदेश में स्फूर्ति योजना के अंतर्गत बांस उत्पाद क्लस्टर्स का विकास किया जा सकता है।
- **श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक, MPHSVN, KVIB :** खादी बोर्ड द्वारा बांस शिल्पियों के प्रशिक्षण में सहयोग प्रदान किया जा सकता है। IDPH योजनान्तर्गत सामान्य सुविधा केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण किया जा सकता है। निगम द्वारा बांस उत्पाद प्रोटोटाइप विकास में सहयोग किया जा सकता है।
- **श्रीमती समिता राजौरा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, ईको पर्यटन विकास बोर्ड :** बोर्ड के कार्यों में बांस आधारित स्ट्रक्चर्स को बढ़ावा देने हेतु प्रदेश में बांस से उपचारण हेतु अधोसंरचना का विस्तार किया जाना चाहिए। इनके क्रय की प्रक्रिया आसान करने हेतु क्रय दरें मिशन द्वारा निर्धारित की जानी चाहिए । बांस शिल्पियों का कौशल उन्नयन कर डिज़ाइन एवं प्रोडक्ट्स का standardization किया जाना चाहिए।
- **श्री सिद्धार्थ एडाके, वरिष्ठ प्रबंधक, WRI :** प्रदेश में WRI द्वारा बांस निर्माण क्षेत्र में बेम्बू वैल्यू चैन एलायंस विकसित किया जा रहा है। सीधी में 9000 हेक्टेयर क्षेत्र में संस्थान द्वारा बांस पौध रोपण किया जा रहा है। शासन की नीतियों के क्रियान्वयन हेतु भी सहयोग प्रदान किया जा सकता है।
- **श्री जी.के. मिश्रा, डिप्टी DGFT :** विभाग द्वारा जिला निर्यात योजना बनाने के अंतर्गत सीहोर, ग्वालियर एवं देवास का बांस उत्पाद निर्यात हेतु चयन किया गया है। शासन की बांस क्षेत्र विकास हेतु नीतियों के इन जिलों में क्रियान्वयन में

सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

- **डॉ. शानू शर्मा, सहायक प्राध्यापक, SPA भोपाल :** SPA द्वारा मिशन के सहयोग से बांस प्रोडक्ट डिजाइन लैब का निर्माण किया जा रहा है। संस्थान द्वारा विद्यार्थियों, शिल्पियों, बांस आर्किटेक्टस् की प्रतिभागिता से बांस डिजाइन कार्यशाला का भविष्य में आयोजन किया जायेगा।

विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सुझावों से अवगत होने के पश्चात् देवास, हरदा एवं रीवा जिलों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत एवं वनमण्डल अधिकारियों ने अपने-अपने जिलों में बांस क्षेत्र विकास की वर्तमान स्थिति, क्रियान्वित योजनाएं, वर्ष 2022-23 हेतु बांस पौधरोपण, बांस आधारित उद्योगों की स्थापना एवं बांस कृषक एवं शिल्पी प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं उपलब्धि की जानकारी दी।

अंत में डॉ. अजय कुमार भट्टाचार्य द्वारा कार्यशाला में हुई चर्चा की संक्षिप्त जानकारी देकर निम्नलिखित सुझाव दिए गए :-

- प्रदेश के प्रत्येक जिले के लिए "district bamboo development plan" का विकास ।
- स्मार्ट शहरों में बेम्बू ऑक्सीजन पार्क का निर्माण।

कार्यशाला के समापन सत्र में श्री अतुल कुमार जैन, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (अनुसंधान एवं विस्तार) द्वारा यह सुझाव दिया गया की शासकीय रोपणियों में व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बांस प्रजाति के पौधों को विकसित किया जावे जिससे राज्य में अधिक से अधिक उच्च गुणवत्तापूर्ण पौधे रोपित किये जा सकें। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा प्राइवेट सेक्टर के सहयोग से बांस कृषि क्षेत्र में अभिनव प्रयोग किये जावें जिससे कृषकों की आय दोगनी की जा सके।

कार्यवाही के मुख्य बिंदु

- ODOP जिलों में बांस वैल्यू चैन के सभी स्टेकहोल्डर्स से चर्चा कर "District Bamboo Development Plan" बनाना ।
- तीनों जिलों में कृषकों से संपर्क कर प्रत्येक जिले में आगमी 5 वर्षों में कम से कम 10000 हे. में बांस पौधरोपण करवाना।
- SRLM द्वारा गठित SHGs के माध्यम से MGNREGA योजना के अंतर्गत वन क्षेत्र में वृहत स्तर पर (प्रत्येक जिले में कम से कम 1000 हे. में) बांस रोपण करवाना।
- जिलों में बांस शिल्पियों/कारीगरों/बसोड़ समाज के सदस्यों की पहचान कर उनका कौशल विकास/उन्नयन करना।
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग की योजनान्तर्गत निजी क्षेत्र में फर्नीचर, खिलौना एवं संबंधित वैल्यू चैन प्रोडक्ट्स की निर्माण इकाई की स्थापना।
- तीनों जिलों में बांस के ट्रीटमेंट एवं सीज़निंग प्लांट्स की स्थापना।
- बांस आधारित समुदायों को लाभ पहुँचाने हेतु ODOP जिलों में स्फूर्ति योजना के अंतर्गत प्रोजेक्ट्स तैयार करना ।
- इन जिलों में राजस्व भूमि चिन्हित कर पर्यटन निगम/बोर्ड के सहयोग से बेम्बू क्राफ्ट विलेज की स्थापना हेतु योजना तैयार करना।

म.प्र. राज्य बांस मिशन प्रदेश में बांस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कृत संकल्पित है। इस कार्यशाला से मिशन को ज्ञात हुआ की वर्तमान में बांस क्षेत्र के विकास हेतु किन-किन संबंधित विभागों एवं संस्थानों के योगदान से समेकित प्रयास किये जा सकते हैं। मिशन को यह आशा है कि यह प्रयास ODOP जिलों एवं राज्य के अन्य जिलों में बांस क्षेत्र विकास की दिशा में एक सफल प्रयोग रहेगा।

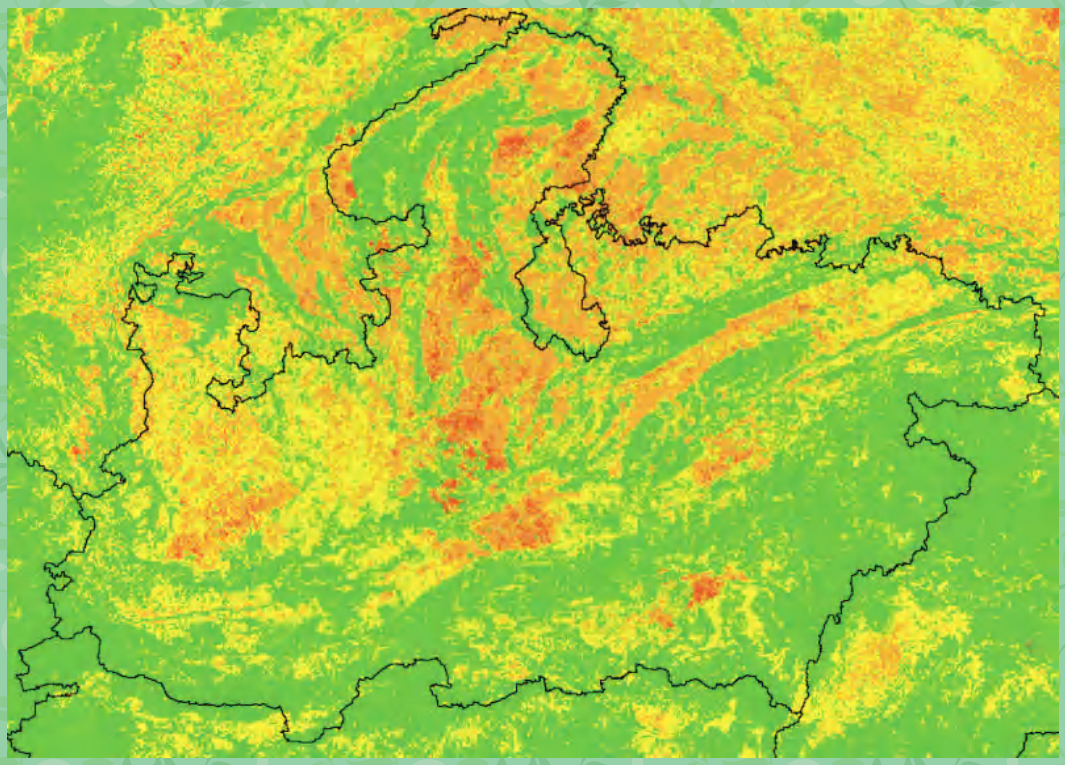

फिगर 1 : मध्यप्रदेश का burn severity map

मध्यप्रदेश में बर्न सीवियरिटी और उसका एटलस

डॉ. अंकुर अवधिया, भा. व. से., उप वनसंरक्षक (सूचना प्रौद्योगिकी)

जंगल की आग आपदाएँ होती हैं- कभी-कभी प्राकृतिक, लेकिन अक्सर मानव निर्मित। वन आवरण, जैवविविधता और वन्य जीवन पर विशिष्ट प्रभावों के अलावा दावानल के कारण मिट्टी पर कई अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभाव होते हैं, जिसमें कार्बनिक पदार्थों के जलने से मिट्टी के रंग और बनावट में परिवर्तन, मिट्टी के रसायन विज्ञान और एंजाइम गतिविधि में परिवर्तन, पीएच (pH) में परिवर्तन, सूक्ष्मजीव समुदाय में परिवर्तन, हाइड्रोफोबिसिटी तथा ह्यूमस में परिवर्तन, अपवाह पर प्रभाव, लकड़ी की आपूर्ति में कमी, और समग्र रूप से पारिस्थितिकी तंत्र में होने वाले परिवर्तन शामिल हैं।

जंगल की आग एक ऐसा साधन है जो वनों को कार्बन डाइऑक्साइड के संचयन और भंडारण के तरीकों से बदलकर वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड को छोड़ने के साधन में परिवर्तित कर देती है, जिसके गंभीर परिणाम ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के लिए होते हैं। ऐसे में उनका प्रबंधन करना सख्त ज़रूरी है।

प्रबंधन की एक कहावत है : "जिसे मापा नहीं जा सकता, उसका प्रबंधन भी नहीं किया जा सकता"। इस प्रकार जंगल की आग, उनके प्रसार और उनकी गंभीरता को इंगित करने की परम आवश्यकता है। आग की तीव्रता

(fire intensity) के विपरीत, जो दहन प्रक्रिया के दौरान जारी ऊर्जा की मात्रा का परिमाप है, जलने की गंभीरता (burn severity) उस डिग्री का वर्णन करती है जिसमें आग से एक क्षेत्र बदल गया है या बाधित हो गया है (फिगर 1)।

जलने की गंभीरता का अनुमान आग से होने वाले नुकसान की मात्रा, मिट्टी के कार्बनिक पदार्थों के जलने, मिट्टी के पकने और काला होने और अन्य साधनों को देखकर लगाया जा सकता है। परन्तु इन सभी के लिए श्रम-और-द्रव्य-घनिष्ठ क्षेत्र के दौरे की आवश्यकता होती है, जिस कारणवश आज तक इसके सुलभ गणना और मानचित्र उपलब्ध नहीं थे।

आज हमारे पास किसी क्षेत्र की जलने की गंभीरता की गणना के लिए उच्च-रिज़ॉल्यूशन मल्टी-स्पेक्ट्रल उपग्रह इमेजरी की उपलब्धता हो गयी है। जलने की गंभीरता की गणना हेतु स्वस्थ वनस्पति और जली हुई मिट्टी के स्पेक्ट्रल कैरैक्टरिस्टिक्स (spectral characteristics) का उपयोग किया जा सकता है (फिगर 2)। स्वस्थ वनस्पति निकट इन्फ्रा-रेड में एक मजबूत परावर्तन दिखाती है, जबकि जली हुई मिट्टी निकट इंफ्रा-रेड (रंग में काली होने के कारण) में कम परावर्तन दिखाती है। दूसरी ओर, स्वस्थ वनस्पति शॉर्ट-वेव इन्फ्रा-रेड क्षेत्रों में बहुत कम परावर्तन दिखाती है, जबकि जले हुए क्षेत्र शॉर्ट-वेव इन्फ्रा-रेड में बड़ा परावर्तन दिखाते हैं।

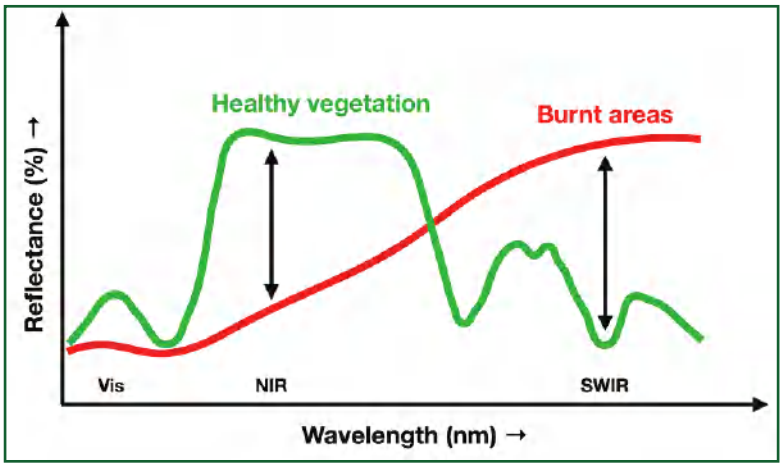

फिगर 2 : स्वस्थ वनस्पति और जली हुई मिट्टी के स्पेक्ट्रल कैरैक्टरिस्टिक्स

इन वर्णक्रमीय विशेषताओं को सामान्यीकृत जला अनुपात (normalised burn ratio, NBR) में परिवर्तित किया जा सकता है :

$$NBR = \frac{NIR - SWIR}{NIR + SWIR}$$

NBR का उच्च मूल्य स्वस्थ वनस्पति का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि कम मूल्य जले हुए क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है। गैर-जले क्षेत्रों का मान शून्य के करीब होता है।

आग से पहले और आग के बाद के एनबीआर मूल्यों के बीच का अंतर एनबीआर में हुए बदलाव का माप देता है :

$$dNBR = [?][?]NBR = NBR_{prefire}[?][?][?]\,NBR_{postfire}$$

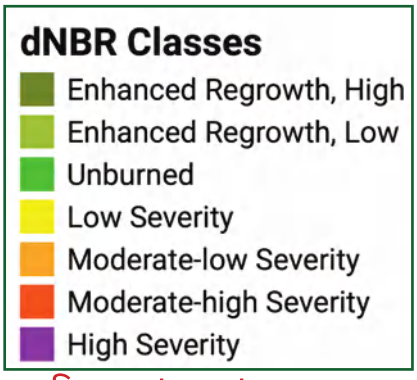

फिगर 3 : dNBR classes

ये dNBR माप संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (USGS) द्वारा वर्गीकृत किये गए हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations) द्वारा आपदा प्रबंधन और आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए अंतरिक्ष-आधारित सूचना (Space Information for Disaster Management and Emergency Response) के लिए संयुक्त राष्ट्र के बाहरी अंतरिक्ष मामलों के कार्यालय (UN-OOSA) के माध्यम से कार्यान्वित कर जलने की गंभीरता के स्तर के रूप में बनाये गए हैं (फिगर 3)।

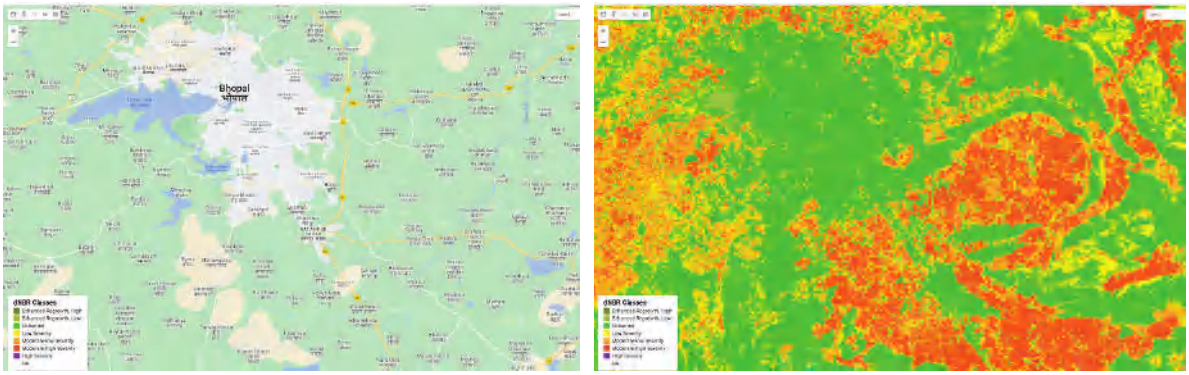

फिगर 4 : भोपाल और आस-पास के इलाके और उनके बर्न सीवियरिटी नक्शे

भोपाल और आस-पास के इलाकों के बर्न सीवियरिटी नक्शों को देखने पर हम यह पाते हैं की शहर और जल-क्षेत्र unburned हैं, जबकि कई अन्य क्षेत्र काफी जले हुए दिख रहे हैं (फिगर 4)। अपर लेक के पश्चिम के इलाके गहरे हरे रंग में दिख रहे हैं, क्योंकि वहां नयी घास उग आयी है (फिगर 4)।

इस क्षेत्र के pre-fire तथा post-fire satellite images और उनके बर्न सीवियरिटी नक्शे को हाई ज़ूम पर देखने पर हम यह पाते हैं कि जले हुए इलाके प्रायः खेत हैं और नरवाई को जलाने के फलस्वरूप इनमें काला रंग स्पष्टतः नज़र आता है (फिगर 5)। इस फिगर को गौर से देखने पर हम यह भी पाएंगे कि जिन-जिन खेतों में फसल सिर्फ काटी गयी है, और जलाई नहीं गयी है (जो post-fire satellite image में काले न दिखकर मिट्टी के भूरे रंग में दिख रहे हैं), वे खेत बर्न सीवियरिटी नक्शे में पीले-नारंगी रंग में दिख रहे हैं, न कि लाल रंग में। जिन-जिन खेतों में फसल काटी भी गयी है, और जलाई भी गयी है (जो post-fire satellite image में मिट्टी के भूरे रंग में न दिखकर काले दिख रहे हैं), वे खेत बर्न सीवियरिटी नक्शे में लाल या बैंगनी रंग में दिखाई देते हैं।

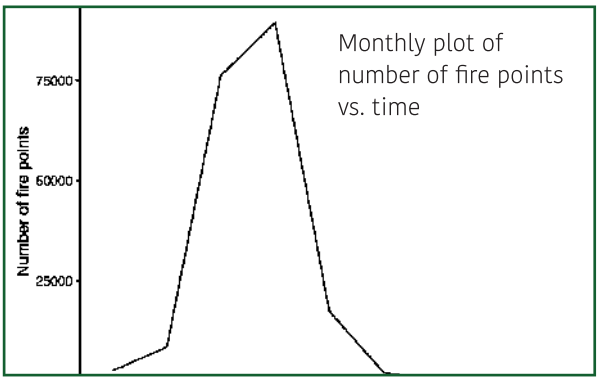

फिगर 6: मध्यप्रदेश में जंगलों की आग का माहवार प्लॉट (डाटा स्रोत: Madhya Pradesh Forest Fire Compendium 2016-2022)

यहाँ गौर करने की बात यह भी है कि चूंकि मध्यप्रदेश में अधिकतर जंगल की आग मार्च और अप्रैल महीने में लगती है (फिगर 6), इसलिए बर्न सीवियरिटी एटलस के निर्माण के लिए मार्च की शुरुआत और अप्रैल के अंत के समय के उपग्रह इमेजरी का उपयोग किया गया है। इसी समय पर रबी की फसल की कटाई होती है और खेतों को अगली फसल के लिए प्रायः जलाकर तैयार किया जाता है, इसलिए खेतों में आग का देखा जाना अपेक्षित भी है।

मध्यप्रदेश में खेतों को जलाना अब प्रायः सभी जगहों पर किया जा रहा है। श्योपुर में भी हम यही देख सकते हैं कि रिहायशी इलाके, जल स्रोत और जंगल हरे हैं, पर खेत लाल और बैंगनी रंगों में दिख रहे हैं (फिगर 7)।

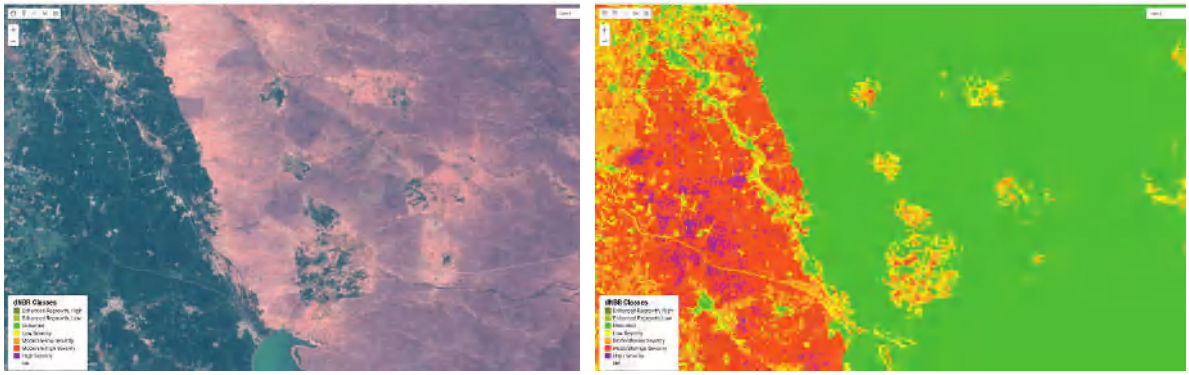

फिगर 7 : श्योपुर में जंगल और गांव के इलाके और उनके बर्न सीवियरिटी नक्शे

कई बार खेतों की यह आग जंगल में भी फैल जाती है (फिगर 8)।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जंगलों को आग से बचाने के लिए आस-पास के खेतों की आग पर भी नज़र रखना आवश्यक है।

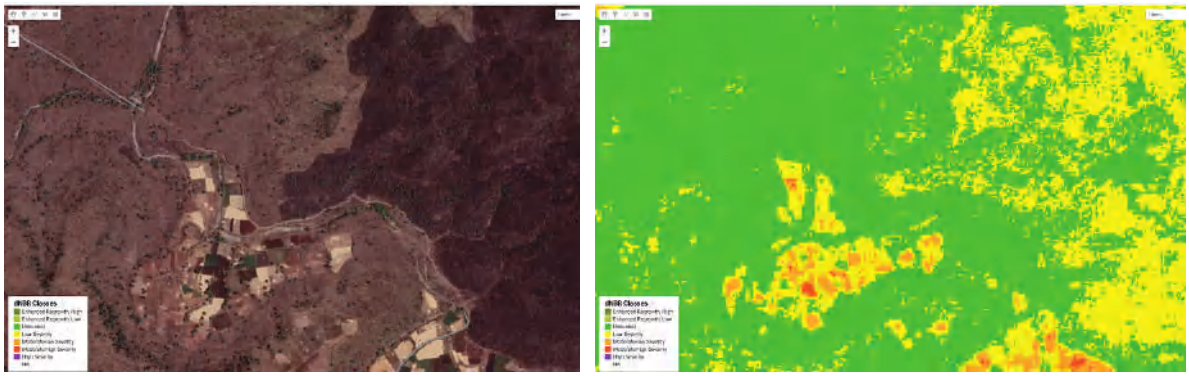

फिगर 8 : हरदा में खेतों की आग जो जंगल में फैल गयी

मध्यप्रदेश का वन-मंडलवार बर्न सीवियरिटी एटलस विभाग की वेबसाइट के एकल लॉगिन पर उपलब्ध है। यह कार्य यूएसजीएस/एनजीए, ईएसए और कई कार्य आयोजना अधिकारियों से प्राप्त सीमाओं और आईटी विंग के कर्मचारियों द्वारा संकलित आंकड़ों पर आधारित है। मैं उन सभी का आभारी हूं।

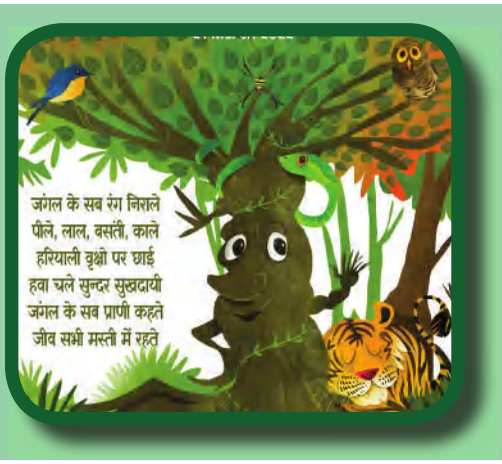

नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन अर्बन बायोडायवर्सिटी कंसर्वेसन''

शहरी जैवविविधता संरक्षण के उद्देश्य से मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड एवं 'द नेचर वालंटियर्स', इंदौर द्वारा एन.बी.ए. चेन्नई व अन्य संस्थाओं के सहयोग से दो दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन अर्बन बायोडायवर्सिटी एण्ड कंसर्वेसन का प्रथम आयोजन इंदौर में दिनांक 05 एवं 06 अगस्त 2022 को किया गया। कॉन्फ्रेंस में स्मार्ट सिटी इंदौर, एप्को, भोपाल, डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. इंडिया, ICLEI, South Asia, जैविक सेतु, टाउन प्लानर्स संस्थान द्वारा सह-आयोजक के रूप में भाग लिया गया। वन विभाग, मध्यप्रदेश की ओर से वन वृत्त- इंदौर (इंदौर, धार एवं झाबुआ) के मुख्य वनसंरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के सहायक सदस्य सचिव एवं तकनीकी विशेषज्ञ कॉन्फ्रेंस में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में श्री अभिलाष खांडेकर द्वारा कार्यक्रम का परिचय देते हुए समस्त अतिथियों का स्वागत किया गया। डॉ. वी.बी. माथुर, चेयरमैन, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण, चेन्नई, कार्यक्रम का उद्बोधन देते हुए जैवविविधता एवं शहरी जैवविविधता के महत्व से अवगत कराया गया एवं शहरों में हो रहे विकास के साथ-साथ जैवविविधता संरक्षण को भी बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित किया गया। डॉ. एस.एल. गर्ग, केसर पर्वत संरक्षक द्वारा इंदौर क्षेत्र में नगर वन स्थापित किया गया, जिसे ''केसर पर्वत'' के नाम से जाना जाता है। केसर पर्वत नगर वन निर्मित करने हेतु किये गये कार्यों के बारे में अवगत कराया गया।

उद्घाटन सत्र में वन विभाग की ओर से श्री चितरंजन त्यागी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास), वन विभाग, मध्यप्रदेश द्वारा नगर वन योजना के बारे में अवगत कराया गया एवं वन विभाग द्वारा नगरीय क्षेत्रों में सघन वृक्ष लगाये जाने की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल द्वारा शहरी स्थानीय स्तर पर जैवविविधता प्रबंधन समितियों के गठन की प्रक्रिया एवं समितियों का शहरी जैवविविधता संरक्षण में महत्व तथा जैवविविधता नियम एवं अधिनियम पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा की गई एवं इस तकनीकी सत्र में श्री राजशेकर, NIUA, नई दिल्ली द्वारा **Coexisting with nature for sustainable cities** विषय पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। इसी क्रम में बढ़ते हुए डॉ. मोनालिसा सेन, ICLEI, नई दिल्ली द्वारा Ecology in Metropolitan Regions Tools, Processes and Policy Interventions विषय पर प्रस्तुतिकरण दिया गया, जिसमें बोर्ड द्वारा स्वीकृत परियोजना शहरी जैवविविधता सूचकांक का परिचय देते हुए इसके महत्व के संबंध में अवगत कराया गया। कार्यशाला के द्वितीय तकनीकी सत्र के द्वितीय चरण में मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के प्रतिनिधि डॉ. बकुल लाड, सहायक सदस्य सचिव द्वारा **Role of Local Bodies in Urban Biodiversity Conservation** विषय पर जैवविविधता नियम, 2002 एवं अधिनियम 2004 के अन्तर्गत स्थानीय निकाय स्तर पर गठित समितियों की भूमिका तथा शक्तियों के संबंध में प्रस्तुतिकरण दिया गया। कॉन्फ्रेंस के समापन के अवसर पर शहरी क्षेत्र में जैवविविधता संरक्षण आधारित इंदौर घोषणा पत्र **"Indore Declatation on Urban Biodiversity"** का ड्राफ्ट प्रस्तुत किया गया।

"नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन अर्बन बायोडायवर्सिटी कंसर्वेसन" दिनांक - 05 एवं 06 अगस्त 2022, स्थान : इंदौर

इन्दौर में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन अर्बन बायोडायवर्सिटी एण्ड कंसर्वेसन संगोष्ठी

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

1) प्रमुख सचिव वन, म.प्र. शासन का राज्य वन अनुसंधान संस्थान में दौरा

दिनांक 22.01.2022 को श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव, वन, म.प्र. शासन के जबलपुर प्रवास के दौरान राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में अनुसंधान गतिविधियों का अवलोकन तथा वन अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उनके द्वारा संस्थान के विभिन्न अनुसंधान प्रयोगशाला, अभिलेखागार, प्रलेख्य शाखा, पुस्तकालय, सभागृह, संग्रहालय, हरबेरियम, बेम्बूसिटम एवं औषधीय पौध जीन बैंक का अवलोकन किया गया एवं भावी अनुसंधान गतिविधिओं के क्रियान्वयन हेतु सुझाव दिये गये। इसके उपरांत संस्थान के अनुसंधान कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर वानिकी अनुसंधान को और अधिक व्यवहारिक एवं क्षेत्र में उपयोगी बनाने की दिशा में परियोजनाएं संचालित करने के दिशा-निर्देश दिये गये। प्रमुख सचिव, वन द्वारा संस्थान के औषधीय पादप उद्यान में सीता अशोक पौधे का रोपण भी किया गया।

प्रमुख सचिव, वन द्वारा संस्थान के विभिन्न अनुसंधान गतिविधिओं का अवलोकन एवं वृक्षारोपण

2) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में कार्यशाला का आयोजन

म.प्र. वन विभाग एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में म.प्र. में वानिकी अनुसंधान के पूर्ण होने जा रहे 100 वर्षों के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यशाला ''Rehabilitation of Degraded Forest Ecosystems in Madhya Pradesh : Emerging Scenario & Way Forward'' का आयोजन दिनांक 09 एवं 10 जून 2022 को होटल कल्चुरी, जबलपुर में आयोजित किया गया। कार्यशाला के आरंभ में श्री अमिताभ अग्निहोत्री, संचालक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

इस कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर मंथन किया गया तथा कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा दिये गये सुझावों एवं निष्कर्षों को भविष्य की नीतियों में समावेश करने हेतु वरिष्ठ वन अधिकारियों द्वारा अनुशंसा की गई।

1. Identification and Classification of degraded Forests
2. Assessment of impact of degraded forest rehabilitation activities
3. Degraded Forests Treatment Strategy
4. Microplanning

कार्यशाला में वरिष्ठ वन अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों द्वारा बिगड़े वन क्षेत्रों में उस क्षेत्र की ईकोलॉजिकल हिस्ट्री के आधार पर ईकोलॉजिकल रेस्टोरेसन किये जाने, बिगड़े वनक्षेत्रों की माइक्रोप्लॉनिंग में संयुक्त वन प्रबंधन की सहभागिता को अनिवार्यत: लागू करने, वनों पर निर्भर आर्थिक रूप से कमजोर विशेषकर महिलाओं को चिहिन्त कर उनकी सहभागिता को निश्चित करते हुए माइक्रोप्लॉन तैयार करने, माइक्रोप्लॉन बनाने हेतु क्षेत्रीय वन अमले को प्रशिक्षित किये जाने, फॉरेस्ट लैण्डस्केप लेबल ईकोलॉजिकल रेस्टोरेसन के क्रियान्वयन में वनक्षेत्रों के समीप विभिन्न मानवीय कारकों को संतुलित करने की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला गया।

कार्यशाला में श्री रमेश कुमार गुप्ता, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र., डॉ. अभय कुमार पाटिल, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, भोपाल, डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना म.प्र., श्री चितरंजन त्यागी, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, विकास, म.प्र., श्री रमेश कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी (कैम्पा), श्री पुष्कर सिंह, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ, भोपाल, डॉ. राजेश्वर राव, निदेशक, टी.एफ.आर.आई., जबलपुर, डॉ. पी.के. शुक्ला, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (सेवानिवृत्त), श्री के. रमन, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (सेवानिवृत्त), डॉ. फैयाज ए. खुदसर, जैवविविधता विशेषज्ञ, दिल्ली विश्वविद्यालय, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के संचालक, श्री अमिताभ अग्निहोत्री, उप संचालक, श्री रविन्द्र मणि त्रिपाठी, सहायक संचालक, श्री अमित कुमार सिंह एवं संस्थान के वैज्ञानिक एवं वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी उपस्थित रहे।

होटल कल्चुरी, जबलपुर में संस्थान द्वारा बिगड़े वनों के पुनर्वास हेतु कार्यशाला का आयोजन

3) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 13.05.2022 को अमिया कुमार दत्ता, मंत्रणा कक्ष, सतपुड़ा भवन, भोपाल में प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र. की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में समिति के वरिष्ठ वन अधिकारी, वैज्ञानिक एवं अन्य हितग्राहियों ने ऑनलाइन तथा उपस्थित होकर भाग लिया। बैठक में संस्थान के संचालक, श्री अमिताभ अग्निहोत्री ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बैठक से संबंधित एजेण्डा के बारे में अवगत कराया। इसके पश्चात प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्थान के वैज्ञानिकों एवं वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारियों द्वारा प्रस्तावित नवीन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परियोजनाओं को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। समिति द्वारा प्रस्तावित परियोजनाओं पर विचार-विर्मश एवं चर्चा उपरांत परियोजनाओं के संचालन के संबंध में दिशा-निर्देश देते हुए कुल 25 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई।

संस्थान के अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

4) रूट ट्रेनर पद्धति से पौधों की तैयारी एवं रोपण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में माह अप्रैल, मई एवं जून, 2022 में म.प्र. के 63 वनमण्डल एवं 11 सामाजिक वानिकी वृत्तों के क्षेत्रीय अमले को रूट ट्रेनर पद्धति से पौधों की तैयारी एवं रोपण हेतु दो दिवसीय 11 आवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 297 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में रूट ट्रेनर्स में पौध की तैयारी हेतु बीज का महत्व, मृदा के पोषक तत्व, पोटिंग मिक्चर की तैयारी, रूट ट्रेनर नर्सरी हेतु अधोसंरचना की आवश्यकता, नर्सरी प्रबंधन, रूट ट्रेनर का नर्सरी से रोपण स्थल तक परिवहन की तकनीक एवं रूट ट्रेनर से पौधों का क्षेत्र में रोपण

की प्रायोगिक प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण की जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी एवं सामाजिक वानिकी वृत्त, जबलपुर के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने रिसोर्स पर्सन की भूमिका निभाई। प्रशिक्षण उपरांत समस्त प्रशिक्षर्णियों से फीडबैक लिया गया तथा प्रशिक्षण में भाग लेने का प्रमाण पत्र वितरित किये गये। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के संचालक, श्री अमिताभ अग्निहोत्री, उप संचालक, श्री रविन्द्र मणि त्रिपाठी, सहायक संचालक, श्री अमित कुमार सिंह एवं डॉ. अर्चना शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित रहकर प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

5) राज्य वन अनुसंधान संस्थान परिसर में बांस प्रजाति बंबुसा टुल्डा का प्रादर्श भूखण्ड की स्थापना

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में बांस प्रजाति बंबुसा टुल्डा के प्रादर्श भूखंड की स्थापना प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी, म.प्र. राज्य बांस मिशन, भोपाल द्वारा प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत जुलाई 2022 में संस्थान परिसर में 2.0 हेक्टेयर क्षेत्र में 800 पौधे लगाकर किये गए। वर्षावन अनुसंधान संस्थान (आरएफआरआई), जोरहाट, असम से बी. टुल्डा के प्रमाणित पौधे प्राप्त किए गए थे।

बांस के वृक्षारोपण में संस्थान के संचालक श्री अमिताभ अग्निहोत्री, उप संचालक, श्री रविन्द्र मणि त्रिपाठी एवं संस्थान के समस्त अमले द्वारा भाग लिया गया। इस प्रादर्श भूखण्ड को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य म.प्र. में बांस की इस प्रजाति के इस कृषि जलवायु क्षेत्र में विकास का प्रदर्शन, निगरानी एवं विभिन्न हितग्राहियों को इसकी व्यावसायिक खेती के लिए प्रोत्साहित करना है। बांस की यह प्रजाति मुख्य रूप से पेपर पल्प उद्योग में उपयोग किया जाता है और ठोस कल्म्स का उपयोग फर्नीचर और बोर्ड आदि बनाने के लिए किया जाता है।

संस्थान परिसर में बांस प्रजाति बंबुसा टुल्डा का प्रादर्श भूखण्ड की स्थापना

6) राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में संकटाग्रस्त प्रजातियों का संरक्षण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की औषधीय पौध नर्सरी में वनों में तेजी से दुर्लभ प्रजातियों की संख्या कम होने के कारण संस्थान की नर्सरी में इन प्रजातियों का संरक्षण एवं पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए एक लाख पौधों की तैयारी की जा रही है, इनमें संकटाग्रस्त, दुर्लभ तथा औषधीय महत्व की प्रजातियाँ सम्मिलित हैं। तैयार की जा रही प्रजातियों में श्योनाक, पाढ़र, दहिमन, दारूहल्दी, बीजा, कल्ला, सलई, कुल्लू, करकट, अंजन, पीला सेम्हल, सोनपाठा, गरूड़ वृक्ष, बीजा, गदहा पलाश, लोध्र वृक्ष, चिरौंजी, तमोली, हडुआ, धनकट, धवा आदि सम्मिलित हैं।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की औषधीय पौध नर्सरी में तैयार किये जा रहे संकटाग्रस्त तथा दुर्लभ पौधे

7) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर स्थित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र की गतिविधियाँ

(अ) औषधीय पौधों का वितरण एवं सम्मेलनों में भागीदारी :- अहमदाबाद, वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन 2022 में दिनांक 20-22 अप्रैल 2022 महात्मा मंदिर, गांधीनगर, गुजरात में डॉ. सुशील कुमार उपाध्याय, उप संचालक एवं श्री पंकज सैनी, परियोजना सहायक द्वारा भाग लिया गया। इस अवसर पर औषधीय पौधे के ब्रोशर वितरण तथा क्रेता-विक्रेता सम्मेलन में सक्रिय रूप से आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया।

उज्जैन में दिनांक 26-30 मई 2022 को अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन एवं 59वें महा अधिवेशन में भाग लेते हुए केन्द्र के श्री दिनेश कुमार कुलदीप, श्री पंकज सैनी एवं श्री प्रदीप कुमार कोरी द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव, आयुष आपके द्वार योजना के तहत नि:शुल्क औषधीय पौधे और इससे संबंधित ब्रोशर वितरण किया गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में हर्बल गार्डन योजना के अंतर्गत 325 औषधीय पौधों का स्कूल, कॉलेजों, अस्पतालों और खेल परिसरों को नि:शुल्क औषधीय पौधों का वितरण किया गया। साथ ही आयुष आपके द्वार योजना के अंतर्गत 8650 औषधीय पौधों का वितरण मध्यप्रदेश के कटनी, सिवनी छिंदवाड़ा जिलों और छत्तीसगढ़ के कोरबा जिलों में आज़ादी का अमृत महोत्सव, के तहत किसानों को नि:शुल्क औषधीय पौधों का वितरण किया गया।

(ब) प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन :-

(1) दिनांक 26.07.2022 को आयुष आपकी खेती योजना के तहत छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में औषधीय पौध सतावर की खेती तथा संरक्षण, संवर्धन, विनाश विहीन विदोहन एवं विपणन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(2) दिनांक 03.08.2022 को आयुष आपकी खेती एवं आयुष आपके द्वार योजनान्तर्गत मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में वन परिक्षेत्र अधिकारी, संयुक्त वन प्रबंधन समिति के सदस्यों एवं कृषकों को औषधीय प्रजाति अश्वगंधा की खेती एवं विपणन तथा औषधीय पौधों का संरक्षण संवर्धन, संवहनीय विदोहन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 120 प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, श्री के. के. भारद्वाज, वनमण्डलाधिकारी, श्री ईश्वर जिरान्डे एवं उप वनमण्डलाधिकारी श्री भारत सोलंकी भी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. सुशील कुमार

उपाध्याय, उप संचालक, क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र मध्य क्षेत्र, जबलपुर, डॉ. राहुल डोंगरे, सहायक प्राध्यापक, जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, श्री दिनेश कुमार कुलदीप, श्री आलोक रैकवार एवं श्री श्यामल राव ने रिसोर्स पर्सन की भूमिका निभाई।

8) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन प्रवास

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में उत्तराखण्ड फॉरेस्ट ट्रेनिंग अकादमी, हल्दवानी, अमरकंटक फॉरेस्ट ट्रेनिंग स्कूल, म.प्र., जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं ओ.एफ.आई.एल., खमरिया, जबलपुर एम्यूनेशन इंडिया लिमिटेड के विभिन्न प्रशिक्षणार्थियों को उनके अध्ययन प्रवास के दौरान संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों से अवगत कराया गया। उनके द्वारा संस्थान के संग्रहालय, औषधीय पौध की नर्सरी, बीज एकत्रीकरण, प्रसंस्करण एवं भण्डारण की तकनीक तथा बीज प्रमाणीकरण, मृदा परीक्षण, वन्यप्राणी, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन, लाख की खेती एवं वन मापिकी से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। उनके द्वारा संस्थान द्वारा प्रकाशित विभिन्न अभिलेखों का भी अवलोकन किया गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में विभिन्न संस्थानों से आये प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन प्रवास

9) राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में विश्व बाघ दिवस का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में विश्व बाघ दिवस का आयोजन के.पी. सगरैया, सभागृह में 29 जुलाई, 2022 को किया गया। कार्यक्रम का प्रायोजन रोटरी क्लब जबलपुर एक्सीलेंस द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के कर्मचारियों के साथ रोटरी क्लब के अधिकारियों और अन्य रोटेरियनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में संस्थान की अनुसंधान गतिविधियाँ एवं विश्व बाघ दिवस तथा भारत में बाघ के संरक्षण के प्रयासों का संक्षिप्त विवरण दिया गया। बाघ के संरक्षण एवं उनके आवास के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में उपस्थित वन अधिकारियों द्वारा अपने अनुभव और विचार साझा किए। इस अवसर पर श्री अमिताभ अग्निहोत्री, संचालक, श्री रविन्द्र मणि त्रिपाठी, उपसंचालक, श्री अमित कुमार सिंह, सहायक संचालक, डॉ अनिरुद्ध मजूमदार, वैज्ञानिक, डॉ. मयंक मकरंद वर्मा, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, श्री मयंक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, रोटरी क्लब, जबलपुर एक्सीलेंस ने अपना उद्बोधन दिया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में विश्व बाघ दिवस का आयोजन

10) राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के स्थापना दिवस पर पौधा वितरण कार्यक्रम

दिनांक 27 जून, 2022 को संस्थान के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्थापना दिवस पर संस्थान स्थित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र, (RCFC-Central Region) आयुष मंत्रालय, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली के सौजन्य से संस्थान परिसर में प्रात: भ्रमण करने वाले आमजन एवं संस्थान के समीप रहवासियों को 270 औषधीय पौधों का नि:शुल्क वितरण किया गया।

अपना सच्चा धर्म निभाएं,
पेड़ बचाकर कर्तव्य निभाएं।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में मानव-हाथी द्वंद विषय पर कार्यशाला का आयोजन

डॉ. श्री बी.एस. अन्निगेरी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक तथा श्री लवित भारती, उप संचालक के मार्गदर्शन में दिनांक 05 एवं 06 अगस्त 2022 को बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, उमरिया में मानव-हाथी द्वंद पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री एन.एस. डुंगरियाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक, श्री जे.एस. चौहान, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) द्वय श्री शुभरंजन सेन एवं श्री सत्यानंद, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यप्राणी कर्नाटक श्री कुमार पुष्कर, संभागायुक्त, शहडोल संभाग श्री राजीव शर्मा सहित कर्नाटक, पश्चित बंगाल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, देहरादून के हाथी विशेषज्ञ, कान्हा, बांधवगढ़, एवं संजय टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक से परिक्षेत्र अधिकारी स्तर तक के अधिकारी एवं वन्यप्राणी चिकित्सक, जबलपुर, रीवा एवं शहडोल वृत्त के मुख्य वन संरक्षक से परिक्षेत्र अधिकारी तक के अधिकारी, गैर सरकारी संस्थाओं यथा WWF, WTI, WCT, Wildlife SOS एवं कार्बेट फाउण्डेशन के प्रतिनिधी शामिल हुये।

अतिथियों का स्वागत एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। प्रथम सत्र में मुख्यालय भोपाल से आये अधिकारियों द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य, म.प्र. में जंगली हाथियों के इतिहास एवं म.प्र. में वर्तमान विचरण क्षेत्र पर प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र में कान्हा, संजय एवं

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व तथा शहडोल, रीवा, जबलपुर वृत्त से आये अधिकारियों द्वारा उनके क्षेत्र में हाथियों के विचरण मानव-हाथी द्वंद की स्थिति, जंगली हाथियों के प्रबंधन में आ रही समस्यायें, एवं द्वंद कम करने के लिये किये जा रहे कार्यों से अवगत कराया गया। सायंकालीन सत्र में अन्य राज्यों से आये हाथी विशेषज्ञों द्वारा उनके राज्यों में किये जा रहे जंगली हाथियों के प्रबंधन एवं मानव-हाथी द्वंद को कम करने के लिये अपनाई जाने वाली विधियों के विस्तृत प्रजेन्टेशन प्रस्तुत किये गये। तत्पश्चात गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा भारत के जंगली हाथी प्रभावित विभिन्न क्षेत्रों में उनके संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

द्वितीय दिवस सभी 100 प्रतिभागियों को चार समूहों में बांटकर प्रत्येक को एक-एक विषय आवंटित किया गया। सभी चार समूहों द्वारा चर्चा उपरांत प्रस्तुतिकरण के माध्यम से अपनी-अपनी अनुशंसायें प्रस्तुत की गईं। WII देहरादून से आये हाथी विशेषज्ञ द्वारा हाथी रेस्क्यू/कैप्चर करने की विधि से अवगत कराया गया।

समापन उद्बोधन में श्री जे.एस. चौहान द्वारा कार्यशाला में हुये विचार विमर्श को उपयोगी निरूपित किया गया। उन्होंने अवगत कराया कि कार्यशाला से प्राप्त अनुशंसाओं को सम्मिलित कर मध्यप्रदेश में जंगली हाथियों के प्रबंधन हेतु प्रोटोकॉल/कार्य योजना तैयार की जायेगी।

कार्यशाला का संचालन श्री आर. थिरूकुराल, उप वनमण्डलाधिकारी मानपुर एवं आभार प्रदर्शन श्री सुधीर मिश्रा, सहायक संचालक ताला द्वारा किया गया।

वानिकी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वनकर्मी सम्मानित

वन परिसर में प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख ने किया ध्वजारोहण

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री रमेश कुमार गुप्ता ने वन विश्राम गृह परिसर भोपाल में स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण किया। श्री गुप्ता ने अधिकारी तथा कर्मचारियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। उन्होंने वनकर्मियों से वन तथा वन्य-प्राणियों के संरक्षण में पूरी तत्परता से कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में वानिकी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 38 वनकर्मियों को सम्मानित भी किया गया।

भोपाल वन वृत्त से सहायक लोक अभियोजन अधिकारी श्रीमती सुधा विजय सिंह भदौरिया, वन क्षेत्रपाल श्रीमती रितु तिवारी, श्री राजेश चौहान, श्री कार्तिकेय शुक्ला, श्री नरेंद्र चौहान, श्री सुनील वर्मा, श्री यशपाल मेहरा, वनपाल श्री रमाकांत शर्मा, श्री राजेश नामदेव, परिक्षेत्र सहायक श्री राजाराम नेगी, वन रक्षक श्री शिवकुमार पटेल, श्री मुकुन्द तिवारी, श्री रामकृष्ण भारतीय, श्री नदीम हुसैन, श्री अंबिका प्रसाद, श्री मनीष कुमार गौड़, श्री रमेश अहिरवार तथा श्री जावेद अहमद कुरैशी, वाहन चालक श्री धर्मेन्द्र राजपूत तथा स्थायी कर्मी श्री रामफूल मारण को सम्मानित किया गया।

वन्य-प्राणी संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स में पदस्थ वन क्षेत्रपाल श्री जितेन्द्र बंसल, वनपाल श्री मुकेश कुमार पटेल, वन रक्षक श्री कैलाश चरार तथा श्री दिलीप सिंह पटेलिया को पुरस्कृत किया गया।

सामाजिक वानिकी वन वृत्तों में पदस्थ उप वन क्षेत्रपाल श्री मुकेश जोशी, वनपाल सर्वश्री रामनिवास तिवारी, गुलाब चन्द्र वंशकार, पंकज पाण्डेय, महेश कुमार उईके, के.के. पवार और वनरक्षक सर्वश्री विमल शर्मा, राहुल पाठक, दिलीप डेमार, उदयमान नीखरे, ऋषि कुमार पंथ, दीपक मेश्राम, गौरव राजपूत तथा कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री प्रजीत वर्मा को पुरस्कृत किया गया।

प्रबंध संचालक राज्य वन विकास निगम श्री ए.के. पाटिल, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक वन्य-प्राणी श्री जे.एस. चौहान, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (उत्पादन) श्री असीम श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (विकास) श्री चितरन्जन त्यागी, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (केम्पा) श्री सुनील अग्रवाल, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (अनुसंधान एवं विस्तार) श्री अतुल कुमार जैन, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (कार्य आयोजना) श्री अतुल श्रीवास्तव तथा प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (प्रशासन) श्री आर.के. यादव, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक श्री एम.एस. धाकड़, श्री एच.यू. खान तथा श्री आलोक दास सहित वरिष्ठ वन अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

उत्कृष्ट योगदान हेतु पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी

Rain Jackets distributed to all the frontline staff by Dr. Kunwar Vijay Shah, Hon'ble Forest Minister

Dr. Kunwar Vijay Shah, Hon'ble Forest Minister, GoMP distributed Rain Jackets to the frontline staff at Madai and Shri Ramesh Gupta Pccf (HoFF) at Pachmarhi. 800 Rain Jacketsdistributed to all the frontline staff including Patrolling Watchers, Barrier, wireless, Boatmen and others involved in patrolling and conservation works in the park. This initiative has been taken up to enhance patrolling efforts in the park especially during rains. STR management thanks Wildlife Conservation Trust (WCT) Mumbai or their generous donation and supporting this initiative.

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में अब पर्यटकों को भ्रमण करायेंगी महिलायें

महिला सशक्तिकरण हेतु अपनी तरह के एक अनोखे प्रयास में बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व प्रबंधन द्वारा 25 महिला गाईड को प्रशिक्षित किया जा रहा है। ये गाईड प्रशिक्षण उपरांत बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में आने वाले देश-विदेश के पर्यटकों को बाघ एवं अन्य वन्यप्राणियों के दर्शन करायेंगी। बांधगवढ़ टाइगर रिजर्व में प्रतिदिन कोर क्षेत्र में 147 वाहन भ्रमण हेतु प्रवेश करते हैं। इसके अतिरिक्त बफर क्षेत्र हेतु भी 120 वाहन निर्धारित हैं। वर्तमान में 108 गाईड पर्यटकों को भ्रमण कराने हेतु पंजीकृत हैं। गाइडों की कमी को देखते हुये बांधवगढ़ प्रबंधन द्वारा 50 नये गाइडों का चयन किया गया है। जिनमें 25 महिलायें शामिल हैं। गाईडों के चयन में निर्धारित योग्यता पूर्ण करने वाले विस्थापित ग्रामों के अभ्यर्थियो को प्राथमिकता प्रदान की गई है। गाईडों का प्रशिक्षण प्रारंभ हो चुका है एवं दिनांक 01.10.2022 से प्रारंभ होने वाले पर्यटन सीजन में ये सभी गाईड पर्यटकों को भ्रमण कराते हुये नजर आयेंगे।

मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन

डॉ. अंकुर अवधिया, भा. व. से., उप वनसंरक्षक (सूचना प्रौद्योगिकी)

"पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद्धनम्।।"

पुस्तकों में रखी हुई विद्या, और दूसरे को दिया हुआ धन, दोनों ही जरूरत के समय काम नहीं आते। अर्थात् विद्या को आत्मसात करना आवश्यक है, उसका उपयोग करना आवश्यक है। कुछ इसी सोच के साथ मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन का निर्माण किया गया है। इस सर्च इंजन पर विभाग की वेबसाइट के एकल लॉगिन से पहुँचा जा सकता है। सर्च इंजन में मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड से प्राप्त सभी जिलों के पौध-जैवविविधता डाटा का समागम किया गया है। डाटा को बोटैनिकल नाम, केटेगरी, फैमिली, लोकल नाम, जिला और ईको रीजन के आधार पर सर्च किया जा सकता है (फिगर 1)।

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
1	Abelmoschus esculentus (L.) Moench	Angiosperms	Malvaceae	Bhindi	Mandsour	Malwa
2	Abrus precatorius L.	Angiosperms	Fabaceae	Ratti, Gumchi, Gunj.	Mandsour	Malwa
3	Abutilon indicum (L.) Sweet	Angiosperms	Malvaceae	Kanghi , Alibala, Mudra.	Mandsour	Malwa
4	Acacia leucophloea (Roxb.) Willd.	Angiosperms	Mimosaceae	Safed keekad, Heevar	Mandsour	Malwa
5	Acacia nilotica (L.) Del.	Angiosperms	Mimosaceae	Bambul, Babul, Bawal, Bawrio, Babool.	Mandsour	Malwa
6	Acalypha indica L.	Angiosperms	Euphorbiaceae	Kuppi	Mandsour	Malwa
7	Acanthospermum hispidum DC.Prodr.	Angiosperms	Asteraceae		Mandsour	Malwa
8	Achyranthes aspera Linn.	Angiosperms	Amaranthaceae	Chirchita, Apmarg, Chichdi, Chirchira, Latjira	Mandsour	Malwa
9	Adansonia digitata L.	Angiosperms	Bombacaceae	Gorakh Imli	Mandsour	Malwa
10	Adhatoda vasica, Adhatoda zeylanica Medik.	Angiosperms	Acanthaceae	Adoosa	Mandsour	Malwa
11	Adhatoda vasica Nees	Angiosperms	Acanthaceae	Adusa, Arusha	Mandsour	Malwa
12	Aegle marmelos (L.) Correa in TLS.	Angiosperms	Rutaceae	Bel	Mandsour	Malwa
13	Aerva lanata (L.) Juss.	Angiosperms	Amaranthaceae	Whole plant.	Mandsour	Malwa
14	Agave americana L.,Sp.Pl.	Angiosperms	Agavaceae	vilayagi Kamvar, Ketaki	Mandsour	Malwa
15	Aloe barbadensis Mill.	Angiosperms	Liliaceae	Ghikamar	Mandsour	Malwa
16	Alysicarpus roxburghianus Thoth.	Angiosperms	Fabaceae		Mandsour	Malwa
17	Amaranthus spinosus L.	Angiosperms	Amaranthaceae	Kantawari chauli	Mandsour	Malwa

फिगर 1 : मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन का मुख पृष्ठ तथा सर्च ऑप्शन्स

इस सर्च इंजन के कई उपयोग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर वन भ्रमण के दौरान स्टॉफ से यह पता चलता है कि किसी पौधे को आम जनता जंगली हल्दी के नाम से जानती है, और हमें उस पौधे का साइंटिफिक नाम जानना हो, तो सर्च इंजन पर लोकल नाम में jangli haldi डालकर एंटर करने पर वे सभी प्रजातियाँ आ जाएँगी, जिनका लोकल नाम जंगली

हल्दी हो (फिगर 2)। यह स्पष्ट है कि दो प्रजातियों को हमारे यहाँ जंगली हल्दी कहा जाता है: Curcuma aromatica तथा Curcuma pseudomontana

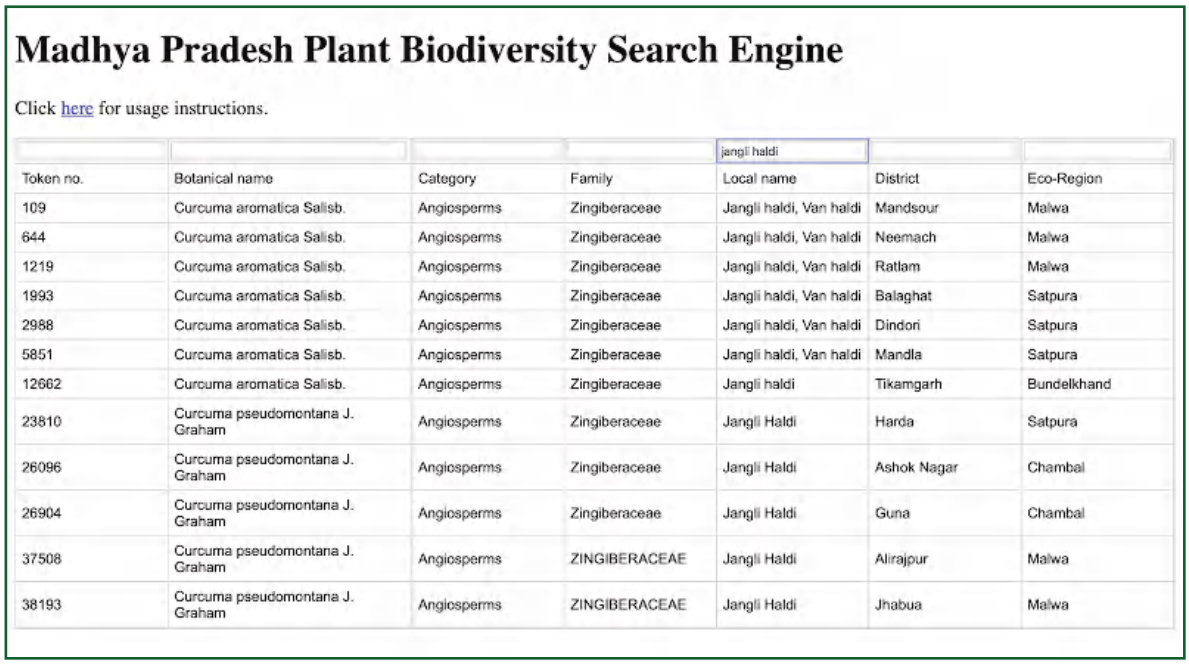

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

				jangli haldi		
Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
109	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Mandsour	Malwa
644	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Neemach	Malwa
1219	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Ratlam	Malwa
1993	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Balaghat	Satpura
2988	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Dindori	Satpura
5851	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi, Van haldi	Mandla	Satpura
12662	Curcuma aromatica Salisb.	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli haldi	Tikamgarh	Bundelkhand
23810	Curcuma pseudomontana J. Graham	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli Haldi	Harda	Satpura
26096	Curcuma pseudomontana J. Graham	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli Haldi	Ashok Nagar	Chambal
26904	Curcuma pseudomontana J. Graham	Angiosperms	Zingiberaceae	Jangli Haldi	Guna	Chambal
37508	Curcuma pseudomontana J. Graham	Angiosperms	ZINGIBERACEAE	Jangli Haldi	Alirajpur	Malwa
38193	Curcuma pseudomontana J. Graham	Angiosperms	ZINGIBERACEAE	Jangli Haldi	Jhabua	Malwa

फिगर 2 : सर्च इंजन पर लोकल नाम से प्रजाति के साइंटिफिक नाम का पता लगाना

इसी प्रकार अगर किसी फैमिली से सर्च करना हो, तो वह भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हम फैमिली में moraceae डाल दें तो moraceae फैमिली के सभी डाटा को देखा जा सकता है (फिगर 3)। moraceae फैमिली के पेड़ पौधों का वन्य जीवों के प्रबंधन के लिए विशेष महत्व होता है, क्योंकि ये अपनी संख्या से बहुत ज़्यादा प्रजातियों को सपोर्ट करते हैं। गर्मियों में जब पानी और खाने की कमी रहती है, तब भी ये पेड़ हरे-भरे रहते हैं। इनके फूल, पत्ते, फल, छाल, शाखाएँ, सभी कुछ - जानवरों के द्वारा खाये जा सकते हैं, और कई जानवर तो इन पेड़ों पर रहते भी हैं। इस प्रकार की प्रजातियों को, जिनका पारिस्थितिकीय तंत्र पर अपनी संख्या से कहीं अधिक महत्व होता है, कीस्टोन प्रजाति (key-stone species) कहा जाता है।

सर्च इंजन पर नेस्टेड सर्च भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अगर हम यह जानना चाहें कि बालाघाट जिले में moraceae फैमिली की कौन-कौन सी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, तो फैमिली सर्च बॉक्स में moraceae और डिस्ट्रिक्ट सर्च बॉक्स में balaghat लिखकर एंटर करने पर हमें यह सूची मिल जाएगी (फिगर 4)।

सर्च इंजन पर रिवर्स सर्च भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए पिछले सर्च पर हमने देखा था कि Ficus carica (अंजीर) बालाघाट में पाई जाने वाली moraceae फैमिली की एक प्रजाति है। अगर इस प्रजाति के वृक्ष बहुत ही कम संख्या में पाए जा रहे हों, तो उनकी संख्या बढ़ाने के लिए कोशिश की जानी चाहिए। रेयर, एनडेन्जर्ड, थ्रेटन्ड (RET : Rare, Endangered, Threatened) प्रजातियों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रायः उनके बीज इकट्ठा कर रोपित किये जाते हैं। तो अब हम यह जानना चाहेंगे कि Ficus carica (अंजीर) के बीज किन-किन इलाकों से मिल सकते हैं। अगर ये पेड़ / बीज कई जिलों में मिलते हों, तो पास के जिलों से बीज इकट्ठा करना उचित होगा, क्योंकि ये रोपण के क्षेत्र हेतु सबसे अच्छी तरह अभ्यस्त होंगे।

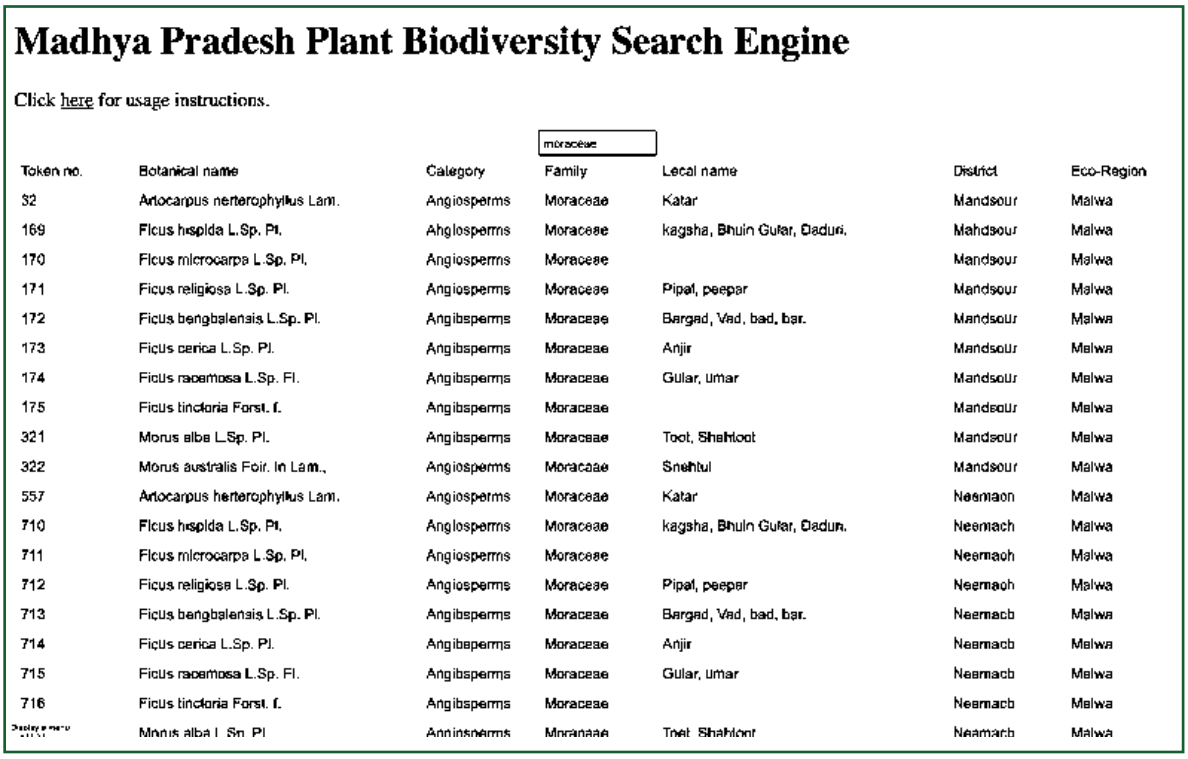

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
			moraceae			
32	Artocarpus herterophyllus Lam.	Angiosperms	Moraceae	Katar	Mandsour	Malwa
169	Ficus hispida L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	kagsha, Bhuin Gular, Dadur.	Mandsour	Malwa
170	Ficus microcarpa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae		Mandsour	Malwa
171	Ficus religiosa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Pipal, peepar	Mandsour	Malwa
172	Ficus bengbalensis L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Bargad, Vad, bad, bar.	Mandsour	Malwa
173	Ficus cerica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Mandsour	Malwa
174	Ficus racemosa L.Sp. Fl.	Angiosperms	Moraceae	Gular, umar	Mandsour	Malwa
175	Ficus tinctoria Forst. f.	Angiosperms	Moraceae		Mandsour	Malwa
321	Morus alba L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Toot, Shahtoot	Mandsour	Malwa
322	Morus australis Foir. In Lam.,	Angiosperms	Moraceae	Shehtul	Mandsour	Malwa
557	Artocarpus herterophyllus Lam.	Angiosperms	Moraceae	Katar	Neemach	Malwa
710	Ficus hispida L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	kagsha, Bhuin Gular, Dadur.	Neemach	Malwa
711	Ficus microcarpa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae		Neemach	Malwa
712	Ficus religiosa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Pipal, peepar	Neemach	Malwa
713	Ficus bengbalensis L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Bargad, Vad, bad, bar.	Neemach	Malwa
714	Ficus cerica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Neemach	Malwa
715	Ficus racemosa L.Sp. Fl.	Angiosperms	Moraceae	Gular, umar	Neemach	Malwa
716	Ficus tinctoria Forst. f.	Angiosperms	Moraceae		Neemach	Malwa
[illegible]	Morus alba L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Toot, Shahtoot	Neemach	Malwa

फिगर 3 : सर्च इंजन पर फैमिली के अनुसार सर्च करना

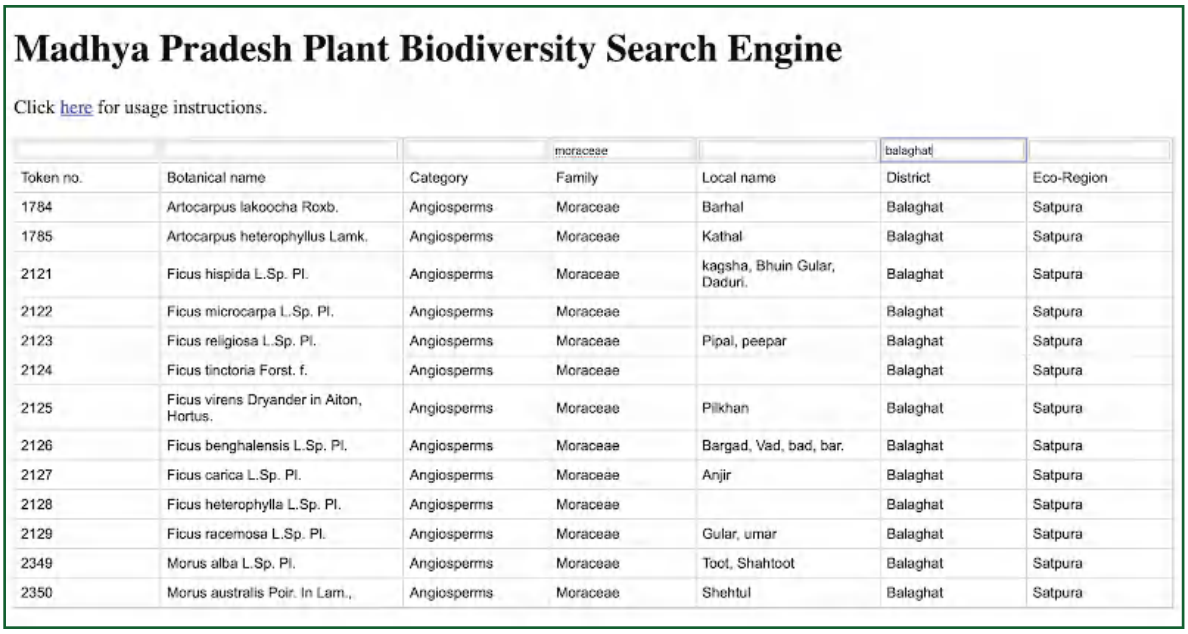

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
			moraceae		balaghat	
1784	Artocarpus lakoocha Roxb.	Angiosperms	Moraceae	Barhal	Balaghat	Satpura
1785	Artocarpus heterophyllus Lamk.	Angiosperms	Moraceae	Kathal	Balaghat	Satpura
2121	Ficus hispida L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	kagsha, Bhuin Gular, Daduri.	Balaghat	Satpura
2122	Ficus microcarpa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae		Balaghat	Satpura
2123	Ficus religiosa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Pipal, peepar	Balaghat	Satpura
2124	Ficus tinctoria Forst. f.	Angiosperms	Moraceae		Balaghat	Satpura
2125	Ficus virens Dryander in Aiton, Hortus.	Angiosperms	Moraceae	Pilkhan	Balaghat	Satpura
2126	Ficus benghalensis L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Bargad, Vad, bad, bar.	Balaghat	Satpura
2127	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Balaghat	Satpura
2128	Ficus heterophylla L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae		Balaghat	Satpura
2129	Ficus racemosa L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Gular, umar	Balaghat	Satpura
2349	Morus alba L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Toot, Shahtoot	Balaghat	Satpura
2350	Morus australis Poir. In Lam.,	Angiosperms	Moraceae	Shehtul	Balaghat	Satpura

फिगर 4 : सर्च इंजन पर नेस्टेड सर्च करना

बालाघाट सतपुड़ा ईको रीजन में आता है। अतः बोटैनिकल नाम में Ficus carica तथा ईको रीजन में satpura डालकर एंटर करने से हमें सतपुड़ा ईको रीजन के वे सभी इलाके मिल जाएंगे जहाँ Ficus carica (अंजीर) के पेड़ मिलते हैं (फिगर 5)।

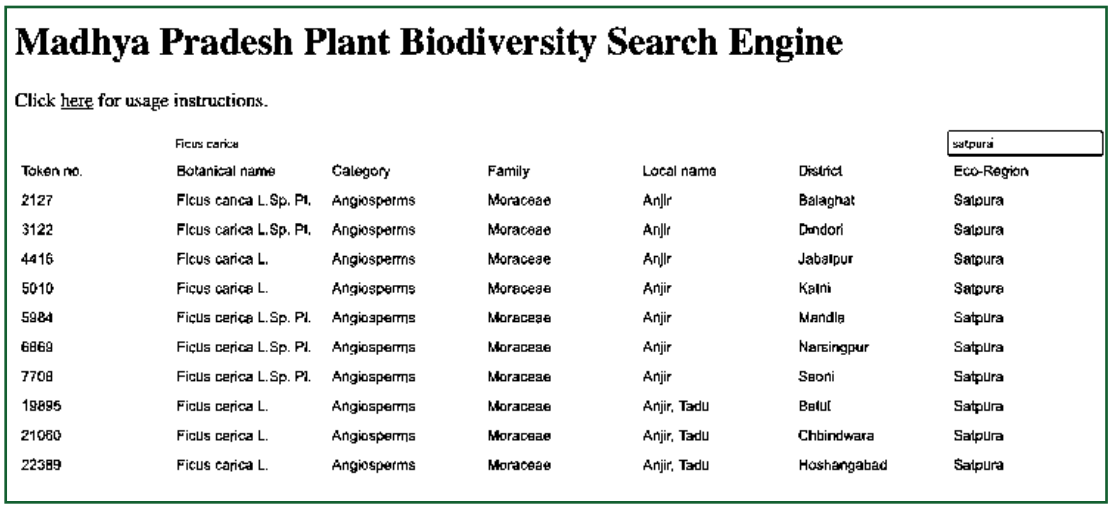

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

Ficus carica | satpura

Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
2127	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Balaghat	Satpura
3122	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Dindori	Satpura
4416	Ficus carica L.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Jabalpur	Satpura
5010	Ficus carica L.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Katni	Satpura
5984	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Mandla	Satpura
6869	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Narsingpur	Satpura
7708	Ficus carica L.Sp. Pl.	Angiosperms	Moraceae	Anjir	Seoni	Satpura
19895	Ficus carica L.	Angiosperms	Moraceae	Anjir, Tadu	Betul	Satpura
21060	Ficus carica L.	Angiosperms	Moraceae	Anjir, Tadu	Chhindwara	Satpura
22389	Ficus carica L.	Angiosperms	Moraceae	Anjir, Tadu	Hoshangabad	Satpura

फिगर 5 : सर्च इंजन पर रिवर्स नेस्टेड सर्च करना

मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन का उपयोग वर्किंग प्लान बनाने के लिए भी किया जा सकता है। वर्किंग प्लान में वनमण्डल की सभी प्रजातियों की सूची होती है। किसी क्षेत्र की पादप प्रजातियों की सूची बनाने के लिए जिले का नाम डिस्ट्रिक्ट बॉक्स में डालकर सर्च किया जा सकता है (फिगर 6)।

इस प्रकार मध्यप्रदेश प्लांट बायोडायवर्सिटी सर्च इंजन जैवविविधता की जानकारी को एक मैनेजमेंट टूल में परिवर्तित करता है। हमें आशा है कि इसे उपयोगी पाया जाएगा। रॉ डाटा उपलब्ध करने के लिए मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड का आभार।

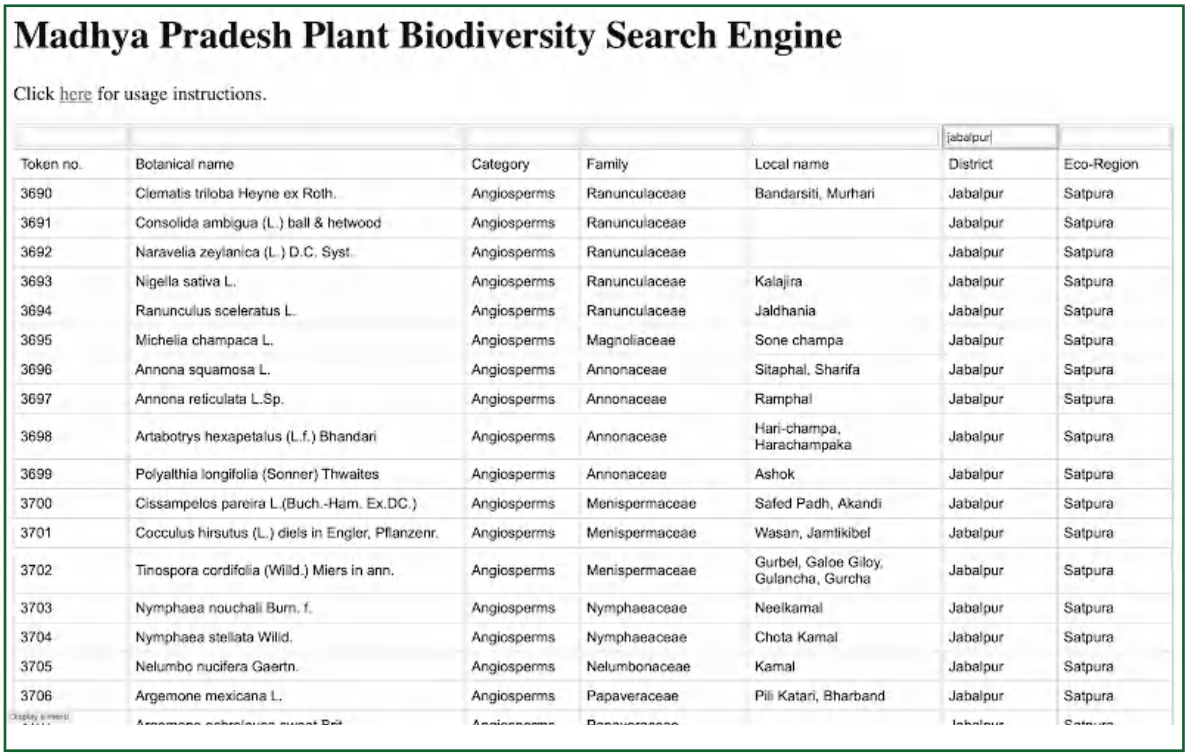

Madhya Pradesh Plant Biodiversity Search Engine

Click here for usage instructions.

jabalpur

Token no.	Botanical name	Category	Family	Local name	District	Eco-Region
3690	Clematis triloba Heyne ex Roth.	Angiosperms	Ranunculaceae	Bandarsiti, Murhari	Jabalpur	Satpura
3691	Consolida ambigua (L.) ball & hetwood	Angiosperms	Ranunculaceae		Jabalpur	Satpura
3692	Naravelia zeylanica (L.) D.C. Syst.	Angiosperms	Ranunculaceae		Jabalpur	Satpura
3693	Nigella sativa L.	Angiosperms	Ranunculaceae	Kalajira	Jabalpur	Satpura
3694	Ranunculus sceleratus L.	Angiosperms	Ranunculaceae	Jaldhania	Jabalpur	Satpura
3695	Michelia champaca L.	Angiosperms	Magnoliaceae	Sone champa	Jabalpur	Satpura
3696	Annona squamosa L.	Angiosperms	Annonaceae	Sitaphal, Sharifa	Jabalpur	Satpura
3697	Annona reticulata L.Sp.	Angiosperms	Annonaceae	Ramphal	Jabalpur	Satpura
3698	Artabotrys hexapetalus (L.f.) Bhandari	Angiosperms	Annonaceae	Hari-champa, Harachampaka	Jabalpur	Satpura
3699	Polyalthia longifolia (Sonner) Thwaites	Angiosperms	Annonaceae	Ashok	Jabalpur	Satpura
3700	Cissampelos pareira L.(Buch.-Ham. Ex.DC.)	Angiosperms	Menispermaceae	Safed Padh, Akandi	Jabalpur	Satpura
3701	Cocculus hirsutus (L.) diels in Engler, Pflanzenr.	Angiosperms	Menispermaceae	Wasan, Jamtikibel	Jabalpur	Satpura
3702	Tinospora cordifolia (Willd.) Miers in ann.	Angiosperms	Menispermaceae	Gurbel, Galoe Giloy, Gulancha, Gurcha	Jabalpur	Satpura
3703	Nymphaea nouchali Burm. f.	Angiosperms	Nymphaeaceae	Neelkamal	Jabalpur	Satpura
3704	Nymphaea stellata Willd.	Angiosperms	Nymphaeaceae	Chota Kamal	Jabalpur	Satpura
3705	Nelumbo nucifera Gaertn.	Angiosperms	Nelumbonaceae	Kamal	Jabalpur	Satpura
3706	Argemone mexicana L.	Angiosperms	Papaveraceae	Pili Katari, Bharband	Jabalpur	Satpura

फिगर 6 : सर्च इंजन से प्रजातियों की सूची तैयार करना

महाराजा मार्तण्ड सिंह जूदेव व्हाइट टाइगर सफारी एण्ड जू मुकुन्दपुर

प्रस्तावना :- विन्ध्य की धरा सफेद बाघों की जननी है। इसी विन्ध्य क्षेत्र ने पूरी दुनियां को सफेद बाघ दिए हैं। सीधी के जंगलों के बीच देवा एक गांव है जहां रीवा महाराज ने अपने अतिथि महाराजा अजीत सिंह के सम्मान में आखेट का कैम्प लगाया था। इसी के पास पनखोरा गांव के बरगड़ी के जंगल में, एक नाले के किनारे एक गुफा है जहां से 27 मई 1951 में इसी विन्ध्य क्षेत्र में महाराज रीवा श्री मार्तण्ड सिंह जूदेव जी के द्वारा, एक सफेद बाघ शावक को पकड़कर अपने गोविन्दगढ़ किले में रखा गया। जंगल से जिन्दा पकड़े जाने वाला सम्भवत: यह आखिरी सफेद बाघ था। यह सफेद बाघ शावक सबका मन मोह रहा था तो इसका नाम मोहन रखा गया। इसी मोहन से प्रथम बार बंदी अवस्था (Captivity) में बाघों का प्रजनन प्रारम्भ हुआ और फिर गोविन्दगढ़ विश्व सफेद बाघों को प्रथम बन्दी (Captive) प्रजनन केन्द्र के रूप में विख्यात हुआ। आज विश्व में जीवित समस्त सफेद बाघ "मोहन तथा राधा" की ही संतति हैं। लगभग 19 वर्षों तक गोविन्दगढ़ के राजमहल में शानोशौकत के साथ सफेद बाघों का परिवार बढ़ाने वाले और मानवता को प्रकृति की अनुपम भेंट देने वाले मोहन की 18 दिसम्बर 1969 को मृत्यु हो गई। इसकी अंत्येष्टी पूर्ण राजकीय सम्मान से महाराजा मार्तण्ड सिंह जी द्वारा करवाये जाने के निर्देश जारी किये गये। जुलाई 1976 में गोविन्दगढ़ में अन्तिम सफेद बाघ विराट की मृत्यु के साथ ही विन्ध्य में सफेद बाघ इतिहास में खो गए।

मुकुन्दपुर में इस चिड़ियाघर सह वन्यप्राणी उपचार केन्द्र की स्थापना के लिए मुख्य वनसंरक्षक रीवा, वनमण्डल अधिकारी सतना व वनमण्डल के कर्मचारियों के अथक प्रयास से मुकुन्दपुर चिड़ियाघर के निर्माण की योजना तैयार की गई। इसमें सफेद बाघ सफारी की भी स्थापना की गई। मुकुन्दपुर व्हाइट टाइगर सफारी सफेद बाघ के लिये सम्भवत दुनियां की प्रथम सफारी है जहां 40 साल बाद सफेद बाघ इतने बड़े क्षेत्र में विचरण कर रहा है।

- **सतना वनमण्डल, मुकुन्दपुर परिक्षेत्र, मांद रिजर्व**
- **क्षेत्रफल-100 हेक्टर (25 हेक्टर में व्हाइट टाइगर सफारी, 75 हेक्टर में जू)**
- **कुल प्रस्तावित इन्क्लोजर 40 (व्हाइट टाइगर सफारी-1, मांसाहारी वन्यप्राणी-15, शाकाहारी वन्यप्राणी-17, पक्षी-3, रेप्टाइल्स-4)**
- **निर्मित इन्क्लोजर-30 - निर्माणाधीन इन्क्लोजर-05 (Wild Dog, Fox, Hedge hog, Porcupine & Bird Aviary)**
- **निर्माण हेतु शेष इन्क्लोजर (Primates, Reptile house and Butterfly park)**

जू में वर्तमान वन्यप्राणी संख्या

क्र.	प्रजाति	नर/मादा/बच्चा	संख्या	क्र.	प्रजाति	नर/मादा/बच्चा	संख्या
01	सफेद बाघ	01/02/00	03	14	बार्किंग डियर	04/07/04	15
02	पीला बाघ	03/03/00	06	15	ब्लैक बक (एलबिनो)	01/04/00	05
03	लायन	01/01/00	02	16	चिंकारा	01/03/00	04
04	तेन्दुआ	01/03/00	04	17	ईमू	02/02/00	04
05	स्लाथ वियर	03/01/00	04	18	शुतुरमुर्ग	01/01/00	02
06	सांभर	04/05/02	11	19	कामन पाम सीवेट	02/01/00	03
07	चीतल	12/20/12	44	20	हायना (लकड़बग्घा)	02/00/00	02
08	ब्लैक बक	11/07/02	20	21	जैकाल (सियार)	02/03/00	05
09	नीलगाय	03/00/00	03	22	मगरमच्छ	01/02/00	03
10	वाइल्ड वोर	02/01/00	03	23	पारकुपाइन (सेही)	01/00/00	01
11	थामिन डियर	03/03/00	06	24	ऊदबिलाव	01/00/00	01
12	बारासिंघा	01/03/00	04	25	जंगल कैट	02/00/00	02
13	हॉग डियर	00/03/00	03	26	चौसिंघा	00/01/00	01

प्रजाति -24, वन्यप्राणी - 161

- मुकुन्दपुर जू में अप्रैल 2016 से 23 अगस्त 2022 तक भारतीय पर्यटकों 1721124 एवं विदेशी पर्यटकों 157 कुल 1721281 पर्यटकों द्वारा भ्रमण किया गया है।

क्र.	वर्ष	पर्यटक संख्या	रिमार्क
1	2	3	4
1.	2016-17	315515	20 मार्च 2020 से 27 जून 2020 एवं 19 अप्रैल 2021 से 30 मई 2021 तक लॉकडाउन के कारण जू बन्द रहा।
2.	2017-18	259603	
3.	2018-19	300559	
4.	2019-20	300590	
5.	2020-21	186355	
6.	2021-22	258806	
7.	2022-23 (25 Aug 22)	99850	
	Total	**1721281**	

वन्यप्राणी अपराध का सफल अन्वेषण

म.प्र. राज्य वन विकास निगम लि. लामटा परियोजना मंडल बालाघाट (म.प्र.)

श्रीमती प्रतिभा अहिरवार भा.व.से. संभागीय प्रबंधक लामटा परियोजना मण्डल बालाघाट (म.प्र.)

सामान्य विवरण :- म.प्र. राज्य वन विकास निगम लि. की इकाई लामटा परियोजना मण्डल बालाघाट का गठन 1 नवम्बर 1975 को किया गया है। इस परियोजना मण्डल के अन्तर्गत वर्ष 1975 से 2009 तक उत्तर (सामान्य) वनमण्डल बालाघाट के उत्तर लामटा, दक्षिण लामटा, पश्चिम बैहर, उत्तर उकवा परिक्षेत्र के एवं दक्षिण (सामान्य) वनमण्डल बालाघाट के लालबर्रा, वारासिवनी, कटंगी, बालाघाट परिक्षेत्र के कुल 218 कक्ष 52449.379 हे. (524.493 वर्ग किमी) वन क्षेत्र प्रभार में है। जिसमें से 85 कक्ष 23739.522 हेक्टेयर लगभग 45 वनक्षेत्र कान्हा-पेंच कॉरिडोर में है। इसके अतिरिक्त उकवा परिक्षेत्र की बैहर सर्किल कान्हा टाइगर रिजर्व से लगा है तथा वारासिवनी परियोजना परिक्षेत्र का वनक्षेत्र पेंच टाइगर रिजर्व के बफर जोन से लगा होने के कारण यहां वन्यप्राणियों की बहुलता है। वनक्षेत्रों में वन्यप्राणी मुख्यत: बाघ एवं तेन्दुआ विचरण करते हुए पाये जाते हैं तथा वनक्षेत्रों से लगे ग्रामों में भी मवेशियों के शिकार हेतु आ जाते हैं। जिससे कि उनके शिकार की प्रबल संभावना बनी रहती है। दिनांक 16.06.2022 को लामटा परियोजना मण्डल के वारासिवनी परिक्षेत्र में बाघ के अवैध शिकार होने पर निगम अमले द्वारा की गई त्वरित कार्यवाही की गई है।

वन्यप्राणी बाघ के अवैध शिकार में फरार आरोपी की गिरफ्तारी

मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लि. लामटा परियोजना मण्डल बालाघाट के परियोजना परिक्षेत्र वारासिवनी के सीतापठौर बीट अंतर्गत कक्ष क्रमांक 786 में दिनांक 16.06.2022 को वन्यप्राणी बाघ का शव राजीव सागर नहर में पाया गया था।

प्रकरण का बिन्दुवार विवरण निम्नानुसार है :-

1. दिनांक 16.06.2022 को मृत बाघ के शव का एन.टी.सी.ए. द्वारा जारी एस.ओ.पी. का पालन करते हुए मुख्य वनसंरक्षक, वन वृत्त बालाघाट, 03 वन्यप्राणी चिकित्सक स्थानीय एवं पेंच टाइगर रिजर्व से उपस्थित विशेषज्ञ की उपस्थिति में पोस्टमार्टम प्रक्रिया एवं विधिवत कार्यवाही पूर्ण कर शवदाह कराया गया तथा घटना स्थल को स्थानीय वनमण्डल में उपलब्ध डॉग स्क्वाड द्वारा लगभग 02 कि.मी. की परिधि में सर्चिंग की कार्यवाही की गई। जिसमें प्राथमिक तौर पर कोई साक्ष्य नहीं पाया गया।
2. दिनांक 16.06.2022 को मृत बाघ के शव के पोस्टमार्टम के दौरान वन्यप्राणी विशेषज्ञ द्वारा किये गये शव परीक्षण से तथ्य ज्ञात हुआ कि, 03 पंजे एवं 02 केनाईन दांत गायब थे। अत: प्रथम दृष्टया अवैध शिकार की संभावना के आधार पर वन अपराध प्रकरण क्रमांक 277/16 दिनांक 16.06.2022 दर्ज किया गया।
3. वन अपराध प्रकरण के अन्वेषण हेतु उप संभागीय प्रबंधक को कार्यालयीन आदेश क्रमांक/वविनि/03/ स्टेनो/22/89 दिनांक 17.06.2022 से जांच अधिकारी नियुक्त किया गया।
4. दिनांक 19.06.2022 को जांच दल द्वारा प्रकरण की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए विद्युत विभाग से घटनाक्रम की संभावित अवधि का विद्युत ट्रिपिंग डेटा का संकलन किया गया। तथा जल संसाधन विभाग से उक्त नहर में वाटर लो के डेटा का भी परीक्षण किया गया। जिससे कि बाघ की मृत्यु की अनुमानित अवधि एवं शव नहर में गिरने/फेंके जाने के पश्चात् शव विस्थापन की स्थिति की संबंधी डेटा का प्रकरण की विवेचना में उपयोग किया गया। जिससे कि बाघ की प्राकृतिक मृत्यु/दुर्घटना की संभावना का भी परीक्षण किया जा सके।
5. दिनांक 22.06.2022 को मृत नर बाघ का पोस्टमार्टम कराये जाने के उपरांत विष परीक्षण हेतु विसरा संबंधी साक्ष्य को सीलबंद के पश्चात् राज्य फॉरेंसिंक विज्ञान प्रयोगशाला सागर भेजा गया। जिसमें कि फॉरेंसिक रिपोर्ट में बाघ की मृत्यु विष द्वारा न होने का अभिमत दिया गया।
6. दिनांक 19.06.2022 को विवेचना अधिकारी एवं परियोजना परिक्षेत्र के स्थानीय अमले एवं जबलपुर टाइगर स्ट्राइक फोर्स के डॉग स्क्वाड द्वारा संयुक्त रूप से घटना स्थल के 500 मीटर की परिधि में पुन: सघन सर्चिंग कार्यवाही की गई। जिसमें घटना स्थल से 50 से 60 मीटर दूर वन्यप्राणी बाघ के पगमार्क, बैलगाड़ी का टूटा हुआ टुकड़ा एवं शिकार में उपयोग किये जाने वाले पी.व्ही.सी. केबल/जी.आई. वायर के टुकड़े प्राप्त हुए।
7. दिनांक 19.06.2022 को डॉग स्क्वाड द्वारा घटना स्थल पर प्राप्त सामग्रियों को सूंघकर संदिग्ध व्यक्ति के घर तक अमले को पहुंचाया गया। जिसके पश्चात् संदिग्ध के खेत एवं घर की सर्चिंग कार्यवाही दल के द्वारा की गई।
8. दिनांक 19.06.2022 को सर्चिंग के दौरान संदिग्ध व्यक्ति के घर से शिकार में उपयोग की जाने वाली खूंटी एवं जले हुए जी.आई. तार के टुकड़े तथा अन्य संदिग्ध सामग्री प्राप्त हुई। मौके पर विधिवत कार्यवाही की गई।
9. दिनांक 21.06.2022 को संदिग्ध व्यक्ति के खेत से जप्त वन्यप्राणी अव्यव को फॉरेन्सिक जांच हेतु नानाजी देशमुख वेटनरी साइंस यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ वाईल्ड लाइफ फॉरेन्सिक एण्ड हेल्थ जबलपुर भेजा गया। तत्पश्चात् दिनांक

23.07.2022 फॉरेंसिंक रिपोर्ट के आधार पर उक्त संदिग्ध को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

10. दिनांक 23.07.2022 को गिरफ्तार आरोपी को 03 दिवस की पी.आर. प्राप्त कर प्रकरण में संलग्न अन्य आरोपियों की पूछताछ की गई। प्रकरण में अन्य संलिप्त आरोपी की गिरफ्तारी कर माननीय न्यायालय में प्रस्तुत कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

11. दिनांक 25.07.2022 को प्रकरण में आरोपियों द्वारा अपने कथन में वन्यप्राणी बाघ को विद्युत करेंट लगाकर शिकार किया जाना एवं साक्ष्य नष्ट करने हेतु शव को बैलगाड़ी द्वारा परिवहन कर नहर में फेंका जाना स्वीकार किया गया।

12. दिनांक 27.07.2022 को आरोपियों द्वारा अपनी जमानत याचिका माननीय न्यायालय प्रथम श्रेणी वारासिवनी में की गई। निगम कर्मचारियों द्वारा आरोपी की जमानत के विरुद्ध पत्र प्रेषित किया गया। जिसके परिणामस्वरूप आरोपियों की जमानत याचिका माननीय न्यायालय द्वारा खारिज की गई।

13. दिनांक 29.07.2022 को आरोपियों द्वारा अपनी जमानत याचिका माननीय द्वितीय अपर सत्र न्यायालय वारासिवनी में की गई। निगम कर्मचारियों द्वारा आरोपी की जमानत के विरुद्ध पत्र प्रेषित किया गया। जिसके परिणामस्वरूप आरोपियों की जमानत याचिका माननीय जिला एवं सत्र न्यायालय बालाघाट द्वारा खारिज की गई।

14. दिनांक 01.08.2022 को आरोपियों द्वारा माननीय उच्च न्यायालय जबलपुर में जमानत याचिका लगाई गई। दिनांक 04.08.2022 को ही केश डायरी एडव्होकेट जनरल कार्यालय, माननीय उच्च न्यायालय जबलपुर में जमा कर दी गई है। जमानत पर सुनवाई शेष है।

बाघ के शिकार मामले में दो गिरफ्तार

पिछले महीने राजीव सागर बांध की मुख्य नहर में मिला था बाघ का शव

सत्यम न्यूज़ | बालाघाट

मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड परियोजना मंडल बालाघाट के परियोजना परिक्षेत्र वारासिवनी में पिछले महीने 16 जून को हुए बाघ के शिकार मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। लामटा प्रोजेक्ट की डीएम प्रतिभा अहिरवार ने बताया कि निगम अमला और स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स जबलपुर की टीम की संयुक्त कार्रवाई में पहले घनश्याम पिता बारेलाल डोंगरवार (47) निवासी सीतापठीर, तिरोड़ी को गिरफ्तार किया गया। पुलिस रिमांड में पूछताछ में आरोपी घनश्याम की निशानदेही पर दूसरे आरोपी केसरी पिता बारेलाल डोंगरवार (39) निवासी सीतापठीर को गिरफ्तार किया है। प्रकरण में सर्चिंग कर आरोपियों के पास से अपराध प्रयुक्त सामग्री भी जब्त की गई है। गौरतलब है कि पिछले महीने राजीव सागर बांध की मुख्य नहर में व्यस्क बाघ का क्षत-विक्षत शव बरामद हुआ था, जिसके 3 पंजे और दो कैनाइन दांत गायब थे। टीम मामले की शुरू से शिकार से जोड़कर जांच कर रही थी। आखिरकार लामटा प्रोजेक्ट और जबलपुर की टीम को बड़ी कामयाबी मिली है।

इधर, शूकर के बाल, मोर के पंजे के साथ दो गिरफ्तार

21 जुलाई को दर्ज एक अन्य वन अपराध मामले में निगम अमले ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। डीएम प्रतिभा अहिरवार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी सोहन पिता नानू अहाके (28) और नानू पिता माह अहाके (50) दोनों निवासी सीतापठीर, थाना तिरोड़ी के पास शूकर के 3 दांत, मोर के 2 नग पंजे बरामद किए गए हैं। आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा के लिए न्यायालय में पेश किया गया है।

उपलब्धि

लामटा परियोजना मण्डल के स्थानीय अमले द्वारा स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स जबलपुर के दल के साथ संयुक्त कार्यवाही करते हुए केवल 35 दिवस में ही अपनी सूझबूझ एवं अथक प्रयास से बाघ के अवैध शिकार में लिप्त 02 अपराधियों को पकड़ा गया है। निगम कर्मचारियों तथा स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स जबलपुर के दल इस प्रकार की कार्यशैली प्रशंसनीय/सराहनीय है जो शासन हित में अति उत्तम है।

जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल

अ- क्षेत्रीय वन वृत्त -इन्दौर

जैवविविधता अधिनियम, 2002 एवं म.प्र. जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधान अंतर्गत गठित जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सक्रियकरण, लोक जैवविविधता पंजी के निर्माण एवं जैवसंसाधनों का वाणिज्यिक उपयोग करने वाले व्यापारियों से लाभ प्रभाजन के संबंध में इंदौर वन वृत्त की कार्यशाला वनमण्डलाधिकारी क्षेत्रीय वनमण्डल-इंदौर के कार्यालय में दिनांक 04.08.2022 को आयोजित की गई।

कार्यशाला का आयोजन श्री चितरंजन त्यागी, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक विकास एवं संयुक्त वन प्रबंधन म.प्र., की अध्यक्षता में डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड के आतिथ्य में किया गया।

कार्यशाला के प्रारंभ में प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव द्वारा कार्यशाला के उद्देश्यों एवं उपयोगिता के बारे में अवगत कराया गया। उनके द्वारा वन परिक्षेत्र स्तर के मास्टर ट्रेनर द्वारा मैदानी स्तर पर जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधानों के अंतर्गत जैवविवधिता संरक्षण से संबंधित संपादित किये जाने वाले कार्यों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कार्यशाला में श्री चितरंजन त्यागी, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक विकास एवं संयुक्त वन प्रबंधन म.प्र. द्वारा संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के माध्यम से जैवविविधता संरक्षण एवं जैवविविधता संरक्षण आधारित माइक्रोप्लान तैयार करने के संबंध में विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यशाला में बोर्ड के सहायक सदस्य सचिव एवं तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सक्रीयकरण एवं लोक जैवविविधता पंजी निर्माण, जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 एवं विनियम, 2014 के प्रावधानों, लाभ प्रभाजन की प्रक्रिया एवं कार्यवाही के संबंध में प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर वन वृत्त इंदौर अंतर्गत इंदौर, धार, झाबुआ एवं अलीराजपुर वनमण्डल में व्यापारियों के साथ किये जा रहे लाभ प्रभाजन एवं अनुबंध कार्य की समीक्षा भी की गई।

कार्यशाला में श्री एच.एस. मोहन्ता, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं पदेन मुख्य वनसंरक्षक, वन वृत्त-इंदौर म.प्र, श्रीमती कमलिका मोहन्ता, अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (कार्य आयोजना), इंदौर, श्री पी. जी. फुलझले, मुख्य वनसंरक्षक (कार्य आयोजना), इंदौर म.प्र., श्री नरेन्द्र पण्डवा, वनमण्डलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल- इंदौर म.प्र., श्री जी.डी. बरबड़े, वनमण्डलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल-धार म.प्र., डॉ. बकुल लॉड, सहायक सदस्य सचिव, (सी एण्ड डी), म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, डॉ. एलिजाबेथ थॉमस, सहायक सदस्य सचिव, (बायो), म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, के तकनीकी विशेषज्ञ तथा इंदौर, धार एवं झाबुआ वनमण्डलों के वनपरिक्षेत्र अधिकारी, वन रक्षक, मास्टर ट्रेनर्स एवं पर्यावरणविद् उपस्थित हुये।

कार्यशाला के अंत में वनमण्डलाधिकारी, वनमण्डल-इंदौर श्री नरेन्द्र पण्डवा धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यशाला का समापन किया गया।

वन वृत्त इन्दौर वनमण्डल अंतर्गत दिनांक 04.08.2022 को जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सक्रियकरण एवं लोक जैवविविधता पंजी के निर्माण कार्य हेतु के संबंध में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

ब- क्षेत्रीय वन वृत्त - छतरपुर

जैवविविधता अधिनियम, 2002 एवं म.प्र. जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधान अंतर्गत गठित जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सक्रियकरण, लोक जैवविविधता पंजी के निर्माण एवं जैवसंसाधनों का वाणिज्यिक उपयोग करने वाले व्यापारियों से लाभ प्रभाजन के संबंध में छतरपुर वन वृत्त की कार्यशाला वनमण्डलाधिकारी क्षेत्रीय वनमण्डल-छतरपुर के कार्यालय में दिनांक 26.08.2022 को आयोजित की गई। कार्यशाला का आयोजन डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं सदस्य सचिव के अध्यक्षता मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के आतिथ्य में किया गया।

कार्यशाला के प्रारंभ में प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव द्वारा कार्यशाला के उद्देश्यों एवं उपयोगिता के बारे में अवगत कराया गया। उनके द्वारा वन परिक्षेत्र स्तर के मास्टर ट्रेनर द्वारा मैदानी स्तर पर जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधानों के अंतर्गत जैवविवधिता संरक्षण से संबंधित संपादित किये जाने वाले कार्यों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कार्यशाला में बोर्ड के सहायक सदस्य सचिव एवं तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा जैवविविधता प्रबंधन समितियों के सक्रीयकरण एवं लोक जैवविविधता पंजी निर्माण, जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 एवं विनियम, 2014 के प्रावधानों, लाभ प्रभाजन की प्रक्रिया एवं कार्यवाही के संबंध में प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस अवसर पर वन वृत्त छतरपुर अंतर्गत वनमण्डलों (छतरपुर, उत्तर पन्ना, दक्षिण पन्ना एवं टीकमगढ़) के अंतर्गत व्यापारियों के साथ किये जा रहे लाभ प्रभाजन एवं अनुबंध के संबंध में की जा रही कार्यवाही की समीक्षा भी की गई। कार्यशाला में मुख्य वन संरक्षक, वन वृत्त-श्रीमती राखी नंदा, वनसंरक्षक, कार्य आयोजना, छतरपुर (म.प्र.) छतरपुर, श्री उत्तम कुमार शर्मा, मुख्य वनसंरक्षक, वन वृत्त - छतरपुर म.प्र., श्री महेन्द्र सिंह, वनमण्डलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल-टीकमगढ़ म.प्र., श्री अनुराग कुमार, वनमण्डलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल- छतरपुर म.प्र., श्री गौरव शर्मा, वन मंडलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल- उत्तर पन्ना म.प्र., श्री पुनीत सोनकर, वनमण्डलाधिकारी, क्षेत्रीय वनमण्डल- दक्षिण पन्ना म.प्र., एवं डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं सदस्य सचिव, तथा सहायक सदस्य सचिव तथा बोर्ड के तकनकी विशेषज्ञ तथा कार्यशाला में छतरपुर, उत्तर पन्ना, दक्षिण पन्ना एवं टीकमगढ़ वनमण्डलों के वनपरिक्षेत्र अधिकारी, वनरक्षक, मास्टर ट्रेनर्स एवं पर्यावरणविद् उपस्थित हुए।

कार्यशाला का समापन वनमण्डलाधिकारी, वनमण्डल-छतरपुर श्री अनुराग कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यशाला का समापन किया गया।

वन वृत्त छतरपुर वन मण्डल अंतर्गत दिनांक 26.08.2022 एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वृक्ष हैं प्रकृति का वरदान,
वनोन्मूलन रोके इंसान।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में वनश्री महिला क्लब द्वारा आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम

वनश्री महिला क्लब भोपाल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने वन विहार उद्यान भोपाल में दिनांक 26.07.2022 को पौधारोपण किया। वनश्री महिला क्लब के सदस्यों द्वारा पीपल, नीम, पाकर, कचनार, टिबोबिया, अमलतास, आंवला, बरगद आदि के पौधों का रोपण किया गया। पौधारोपण में वनश्री महिला क्लब की अध्यक्ष श्रीमती कृति गुप्ता, उपाध्यक्ष श्रीमती नीता श्रीवास्तव एवं श्रीमती उषा सिंह, सचिव डॉ. अल्पना भार्गव एवं कोषाध्यक्ष डॉ. श्रेष्ठा के साथ अन्य सदस्य तथा वन विहार के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

एक सकारात्मक पहल : शिक्षा के क्षेत्र में वन विभाग की भूमिका

सेंधवा वनमण्डल अंतर्गत धनोरा परिक्षेत्र में श्री जीवन पोलाया जी परिक्षेत्र अधिकारी के तौर पर पदस्थ हैं। कुछ महीनों पूर्व, मध्यप्रदेश वन विभाग की विस्तार वानिकी योजना के तहत पौधारोपण प्रस्ताव के संबंध में जीवन जी का संपर्क उनके परिक्षेत्र में स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चाचरिया के प्राचार्य से हुआ। विद्यालय में रसायन विज्ञान (Chemistry) विषय के शिक्षक का अभाव है, जिस कारण स्कूल के 11वीं-12वीं छात्रों को स्वयं से Chemistry पढ़ने में काफी कठिनाई हो रही थी।

संयोग से, जीवन पोलाया जी स्वयं BSc BEd हैं, और वन विभाग में वन क्षेत्रपाल पद पर चयनित होने से पूर्व, वे कई वर्षों तक देवास में सरकारी अध्यापक के तौर पर सेवाएं दे चुके थे। यह जानने के बाद विद्यालय प्राचार्य ने जीवन जी से छात्रों की मदद का निवेदन किया। जीवन जी ने प्रस्ताव दिया की अपने विभागीय कार्यों के निर्वहन उपरांत विद्यालय में उपस्थित होकर छात्रों की कक्षा ले सकते हैं। योजना के क्रियान्वयन से पहले जीवन जी ने सेंधवा वनमण्डल अधिकारी से अनुमति मांगी। वनमण्डल अधिकारी ने इस नेक कार्य के लिए न सिर्फ सहमति दी, अपितु जीवन जी को प्रोत्साहित भी किया। जीवन जी हर हफ्ते 2-3 घंटे का अमूल्य समय निकाल कर 11वीं-12वीं छात्रों को रसायन विज्ञान (Chemistry) पढ़ाते हैं। जीवन जी के इस अनूठे योगदान से विद्यालय प्राचार्य/प्रशासन तो कृतज्ञ है। जीवन जी की यह पहल स्थानीय समुदाय के मन में वन विभाग की सकारात्मक छवि पेश कर रही है।

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जून- सितम्बर 2022)

श्री राकेश कुमार यादव
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, (प्रशा- 1)
मुख्यालय, भोपाल

श्री अमिताभ अग्निहोत्री
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक/ संचालक, म.प्र. राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (प्रतिनियुक्ति पर)

श्री पी.के. सिंह
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, (मानव संसाधन विकास)
मुख्यालय भोपाल

श्री रमेश कुमार श्रीवास्तव
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (सूचना प्रौद्योगिकी)
मुख्यालय, भोपाल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (जून-सितम्बर 2022)

श्री रमेश कुमार श्रीवास्तव
प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (सूचना प्रौद्योगिकी) मुख्यालय, भोपाल

श्री रविन्द्र सक्सेना
मुख्य वनसंरक्षक
भोपाल वृत्त

श्री प्रीतम पाल टिटार
वनसंरक्षक, दक्षिण सिंवनी (सा.), वनमण्डल

श्री विन्सेंट रहीम
मुख्य वनसंरक्षक/क्षेत्र संचालक, बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, उमरिया

श्री अशोक कुमार मिश्रा
मुख्य वनसंरक्षक, (प्रशा- 1)
मुख्यालय, भोपाल

श्री यमुना प्रसाद सिंह
मुख्य वनसंरक्षक
शिवपुरी वृत्त

श्री चौक सिंह निनामा
मुख्य वनसंरक्षक
इन्दौर वृत्त

श्री एम.बी. सिरसैया
उप संचालक, पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी

जंगल बचा नहीं करते हैं...!

अगर गहनता से अवलोकन किया जाये तो साफ दिखेगा,
दायित्वों का बोझ बहुत पर अधिकारों की बहुत कमी है.
जंगल बचा नहीं करते हैं
केवल डंडों से लाठी से,
हम तो अभी बहुत पीछे हैं
अपराधी की कद काठी से,
आज हमारे पास आधुनिक हथियारों की बहुत कमी है.
यहाँ पदस्थिति में तो हरदम
रही सियासत सब पर हावी,
अनुशासन की भेंट चढ़ गये
कितने गुणी और मेधावी,
शल्य चिकित्सा आवश्यक पर औज़ारों की बहुत कमी है.
सुनता नहीं निवेदन कोई
सुनी नहीं जाती है विनती,
हाक़िम की नाराज़ी पर ही
होती है ठूंठों की गिनती,
जो खाकी का पक्ष रखें उन अख़बारों की बहुत कमी है.
बस फ़रमान हुए हैं जारी
हर सुविधा सम्पन्न कक्ष से,
मौके पर मरता है खाकी
जो लड़ता है वृक्ष पक्ष से,
बिन सज़दा के चलने वाले दरबारों की बहुत कमी है.

रत्नदीप खरे
98260 43425

अखबारों के आईनें में

ड्रोन कैमरे से सिंहपुर रेंज में प्लांटेशन की निगहबानी शुरू

भास्कर न्यूज | सतना पौधरोपण मामले को लेकर हर समय विवादों में घिरे रहने वाला वन विभाग इसमें पारदर्शिता लाने के लिए अब सेटेलाइट के साथ-साथ ड्रोन कैमरे की भी मदद ले रहा है। जिले में ड्रोन के माध्यम से पौधरोपण के कार्यों की निगहबानी की जा रही है। इसमें प्लांटेशन के कार्य में गुणवत्ता भी देखने को मिल रही है। यह पहला मौका है जब वन अधिकारी पैदल भ्रमण के साथ-साथ आधुनिक तकनीक का भी सहारा ले रहे हैं।

मंगाए जाएंगे नाइट विजन कैमरे

वन विभाग के पास अभी साधारण डे विजन वाला एक ड्रोन कैमरा है। डीएफओ विपिन पटेल का कहना है कि सतना वन मंडल के जंगल अब रिच हो रहे हैं। वन्य प्राणियों की संख्या में बढ़ोतरी होने के कारण अब वन अपराधियों पर नकेल कसने के लिए नाइट विजन ड्रोन कैमरों को मंगाने के लिए प्रस्ताव शीघ्र भेजा जाएगा।

13 लाख 15 हजार पौधरोपण का लक्ष्य

बता दें कि जिले के जंगलों में इस वर्ष 13 लाख 15 हजार 750 पौधों का रोपण किया जा रहा है। सूत्रों से मिली जानकारी में बताया गया है कि पिछले वर्ष पौधरोपण अभियान के दौरान रोपे गए अधिकांश पौधे संरक्षण और संवर्धन के अभाव में सूख गए थे। इन्हीं खामियों को दूर करने के लिए अब 6 महीने तक ड्रोन की सहायता से रोपे गए पौधों पर नजर रखी जाएगी।

ड्रोन कैमरे से खींची गई प्लांटेशन की तस्वीर।

सिंहपुर से हुई शुरुआत

वन मंडल के सिंहपुर रेंज में रोपे जा रहे पौधों की जो तस्वीर ड्रोन से प्राप्त हुई है, उससे वन अधिकारी काफी खुश नजर आ रहे हैं। इसके अलावा मझगवां, चित्रकूट, मैहर, मुकुंदपुर, बरौंधा और उचेहरा के जंगलों में हो रहे प्लांटेशन की निगरानी ड्रोन से की जा रही है। अब तक के जो आंकड़े ड्रोन से विभाग को मिले हैं, उससे ... है आने वाले वर्षों में जंगल का घनत्व बढ़ जाएगा।

फैक्ट फाइल

परिक्षेत्र	रोपित पौधा संख्या	रकबा हे.में
मैहर	171500	290
सिंहपुर	426250	800
बरौंधा	162500	310
उचेहरा	135500	189.57
अमरपाटन	53750	100
नागौद	140000	250
मुकुंदपुर	52500	100
चित्रकूट	83750	160
मझगवां	90000	165
योग	1315750	2364.57

इनका कहना है

आधुनिक यंत्रों से काफी कुछ सुविधा मिल रही है। आने वाले समय में नाइट विजन ड्रोन कैमरे लाने की ...

Mon, 11 July 2022

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की सर्वे रिपोर्ट में खुलासा

बाघों ने कठौतिया के ग्रामीणों की जिंदगी में लाई खुशहाली

भोपाल. दोपहर मेट्रो

बाघों ने कठौतिया के गांव वालों के जीवन में खुशहाली ला दी है। इनका जीवन पहले की तुलना में बदल रहा है। यहां विकसित हो रहे टूरिज्म से आवक बढ़ी है। ये कहते हैं कि उन्हें बाघ के कारण ही अच्छी हवा मिल रही है। गर्मी में पानी की किल्लत नहीं होती है। जंगल सुरक्षित है। अंतर्राष्ट्रीय वन्यप्राणी संस्था डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की सर्वे रिपोर्ट में ग्रामीणों ने यह बात कही है। यह सर्वे इसी महीने किया है, जिसमें 35 से अधिक विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया था। इन विशेषज्ञों ने कठौतिया गांव में रहने वाले 40 परिवार के सदस्यों से एक-एक कर बात की है। इसके बाद रिपोर्ट तैयार की है।

सर्वे का लक्ष्य बाघों की बसाहट के आसपास रहने वाले ग्रामीणों से उनके अनुभव जानना था। साथ ही यह भी पता करना था कि बाघों की मौजूदगी ने उनके जीवन में किस तरह के बदलाव लाए हैं, उन्हें किस तरह सहूलियतें हो रही है और किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

यह संस्था कई देशों में काम करती है, जो मप्र में भी राज्य सरकार के साथ मिलकर वन्यप्राणी संरक्षण पर काम कर रही है। यह गांव भोपाल से सटा हुआ है, जो सीहोर सामान्य वन मंडल की वीरपुर वन रेंज में आता है। जिसकी सीमा भोपाल सामान्य वन मंडल व रातापानी वन्यजीव अभयारण्य से लगी हुई है। इस क्षेत्र में 12 से अधिक बाघों के मूवमेंट का अनुमान है। सर्वे रिपोर्ट में रामा पांडे ने कहा कि बाघों का आमना-सामना हमारे लिए आम बात है। वह कभी हमारे ऊपर हमला नहीं करते हैं। कस्तूरी बाई का कहना है कि वह आज भी जंगल से ही लकड़ी चुनकर लाती है, जब भी जंगल जाती है तो बाघों की आहट महसूस करती है लेकिन उन्हें बाघों ने कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है। इस गांव के प्रकाश जाटव बताते हैं कि उन्हें बाघों के बीच रहने में अच्छा लगता है। वह महसूस करते हैं कि बाघों की वजह से ही जंगल सुरक्षित है।

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की राज्य संचालक संगीता सक्सेना बताती हैं कि वन घनत्व वाले प्रत्येक राज्यों में बाघों की आबादी बढ़ी है। कहीं न कहीं, लोगों को ये आसानी से नजर आने लगे हैं। कुछ इलाके तो ऐसे हैं जहां बाघ, इंसानों के काफी नजदीक रहते हैं। यह सर्वे बाघों के मौजूदगी के बीच रहने वाले लोगों के व्यवहार और उनकी सोच को जानने के लिए किया गया है। जिसका विश्लेषण कर रहे हैं।

एंकर स्टोरी | सेंचुरी के 202 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल को डिनोटिफाई करने का जारी हुआ नोटिफिकेशन

करैरा सेंचुरी का अस्तित्व समाप्त, कर्माझिरी बन रही नई सेंचुरी

भोपाल। एक दशक तक चले कानूनी अंतर्द्वंद के बाद करैरा सेंचुरी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। इस संबंध में मंगलवार को राज्य शासन ने सेंचुरी के 202 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल को डिनोटिफाई करने का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। वहीं राज्य शासन ने पेंच नेशनल पार्क सिवनी के नजदीक 14 वर्ग किलोमीटर में कर्माझिरी सेंचुरी बनाने की अधिसूचना भी जारी की। यानि करैरा सेंचुरी के बदले सिवनी जिले में एक नई सेंचुरी आकार लेगी।

प्रदेश में एकमात्र ये करैरा सेंचुरी ऐसी थी, जहां 1 इंच जमीन वन भूमि नहीं थी। यही वजह रही कि सेंचुरी की घोषणा के साथ ही विरोध के स्वर उठने लगे। इसकी मुख्य वजह यह रही कि 32 गांव के किसानों की 202 वर्ग किलोमीटर की भूमि को लेकर 1982 में करैरा सेंचुरी की घोषणा की गई। सेंचुरी बनने के बाद 1995 में किसानों की भूमि के क्रय विक्रय पर रोक लग गई। इसके बाद से ही सेंचुरी की मुखालफत होने लगी, सोन-चिरैया के दुश्मन बन गए।

वर्ष 2000 से करैरा सेंचुरी को डी-नोटिफाई करने की मांग उठने लगी। किसानों के साथ-साथ जनप्रतिनिधियों ने भी विरोध शुरू कर दिया। किसानों और नेताओं के दबाव में राज्य वन प्राणी सलाहकार बोर्ड ने भी वर्ष 2014-15 में करैरा सेंचुरी को डिनोटिफाई करने के प्रस्ताव को मंजूरी देकर केंद्र को भिजवा ...

फाइल फोटो

मार्च में कलेक्टर ने लिखा था पत्र

22 मार्च 22 को कलेक्टर शिवपुरी ने सीसीएफ माधव नेशनल पार्क और राज्य शासन को पत्र ... किसान अपनी जमीन क्रय विक्रय नहीं कर पा रहे हैं। यही नहीं, इन गांवों में अधोसंरचना विकास भी नहीं हो पा रहा है। करैरा में सोन चिरैया की मौजूदगी का पता चलने पर वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट 1972 ...

करैरा सेंचुरी को डिनोटिफाई कर दिया गया है। अब यहां के किसान अपनी जमीनों की क्रय-विक्रय कर सकेंगे। अब कर्माझिरी को नई ... के रूप में विकसित किया ...। इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है।

जेएस चौहान मुख्य प्राणी अभिरक्षक

कमलाशंकर विश्वकर्मा को उत्कृष्ट उल्लेखनीय कार्य हेतु जिला कलेक्टर द्वारा किया गया सम्मानित

जैव विविधता के क्षेत्र में औषधीय फसलों व राष्ट्रीय बांस मिशन में उत्कृष्ट कार्य हेतु हुये सम्मानित

नीमच। गौड़वाना समाचार।

नीमच जिला मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर दूर मनासा तहसील का गांव भाटखेड़ी जहां के प्रगतिशील किसान कमलाशंकर ... मिशन में उत्कृष्ट उल्लेखनीय कार्य ... माइक्रोबायोलॉजी के साथ-साथ ...

राष्ट्रीय बाँस मिशन में श्री कमलाशंकर विश्वकर्मा ने 1100 पौधे बाँस के लगा रखे है

राष्ट्रीय बाँस मिशन में श्री कमलाशंकर विश्वकर्मा ने 1100 पौधे बाँस के लगा रखे है। यह सब देखने दूर दूर से किसान आते है और जानकारी का लाभ ले रहे है उनके द्वारा खेत पर तरह-तरह ... हरसिंगार (परिजात), गुड़हल, अपामार्ग (लटजीरा), धतूरा, कनेर, कहुनाय (नामी), शिवलिंगी (पुत्र जीवक वटी), किंकोडा, विधारा की बेल, छोटी एवं बड़ी दूधी, शतावरी, ...ली, अतिबला, ... (शंखेश्वर), ... मेहंदी, बेशर्म, ...र, अश्वगंधा, ...डा, अरंडी, ...ताफल आदि ...मान में देखी ...

---

dainikbhaskar.com | भोपाल, बुधवार 7 सितंबर, 2022 | भाद्रपद, शुक्ल पक्ष- 12, 2079

70 साल बाद देश में आएंगे चीते • ग्वालियर से चॉपर में कूनो ले जाया जाएगा, प्रधानमंत्री जंगल में छोड़ेंगे

कूनो में चीतों के बीच जन्मदिन मनाएंगे प्रधानमंत्री मोदी, नामीबिया से 17 सितंबर को 8 अफ्रीकी चीते कूनो पहुंचेंगे

पॉलिटिकल रिपोर्टर | भोपाल

टाइगर स्टेट मप्र का कूनो राष्ट्रीय उद्यान ठीक 10 दिन बाद 8 अफ्रीकी चीतों की अगवानी करने जा रहा है। नामीबिया (साउथ अफ्रीका) से चीते 16 सितंबर को विमान से रवाना होंगे। अगले दिन 17 सितंबर की सुबह ग्वालियर पहुंचेंगे। यहां से चॉपर के जरिए 10 बजे के करीब उन्हें कूनो ले जाया जाएगा। यहां पर पीएम नरेंद्र मोदी उन्हें जंगल में छोड़ेंगे। इसी दिन मोदी का जन्मदिन भी है। मंगलवार को कैबिनेट बैठक में सीएम शिवराज सिंह चौहान ने मोदी के कार्यक्रम के बारे में भी बताया। मोदी कराहल में महिला स्व-सहायता समूह के सम्मेलन को संबोधित भी करेंगे। द. अफ्रीका का चार सदस्यीय दल भी कूनो पहुंच गया है। उनकी रिपोर्ट के आधार पर भारत से एमओयू पर फैसला होगा। मुख्यमंत्री और वन मंत्री विजय शाह 11 सितंबर को श्योपुर जाएंगे। केंद्रीय वनमंत्री भूपेंद्र यादव भी कूनो पहुंच रहे हैं।

अफ्रीकन चीता (फाइल फोटो)

जमीन पांच गुना महंगी... 4 लाख रु. बीघा जमीन के दाम 20 से 25 लाख रुपए हुए

कूनो में चीते आने की खबर के बीच नेशनल पार्क के गेट वाली सेसईपुरा-मोरावन रोड पर जमीन पांच गुना तक महंगी हो गई है। 4 लाख रुपए बीघा में मिलने वाली जमीन अब 20 से 25 लाख रुपए में मिल रही है। मोरावन हल्का के पटवारी बृजेश तोमर के मुताबिक जमीन की कीमत में यह उछाल दो महीने पहले चीते आने की घोषणा के बाद आया है। इस रोड पर एक बहुत बड़ा होटल भी बन रहा है। इसके बनने के बाद यहां पर्यटन और बढ़ेगा।

चीतों को क्वारेंटाइन बाड़े में ही रखा जाएगा... पीसीसीएफ वन्यजीव जेएस चौहान ने बताया है कि नामीबिया में चीतों को टीके लगाकर मेडिकल ट्रीटमेंट दिया जा चुका है और वहां उन्हें क्वारेंटाइन कर रखा हुआ है। कूनो में आने के बाद भी उन्हें कुछ वक्त के लिए क्वारेंटाइन बाड़े में ही रखा जाएगा।

आखिरी बार 1950 में चीता छत्तीसगढ़ में देखा गया था

भारत में चीते विलुप्त हो चुके हैं। 70 साल बाद चीतों की फिर देश में वापसी होगी। भारत में आखिरी बार 1950 में चीता छत्तीसगढ़ राज्य में देखा गया था। इसके बाद ये देश में कहीं नजर नहीं आए। सरकार ने चीता दिखाने वाले को 5 लाख रु. का इनाम भी रखा था। लेकिन चीता कभी किसी को नजर ही नहीं आया। चीतों के रहने के लिए अनुकूल माहौल को देखते हुए ही कूनो का चयन किया गया है।

दैनिक भास्कर

हरित पहल... भोपाल समेत तीन रेल मंडलों के 73 स्टेशनों पर बनेंगे छोटे पार्क

स्टेशनों के पास लगेंगे सुगंधित पौधे, ताकि महक उठे ट्रैक

16 जोन में... 15 अगस्त के बाद प्रोजेक्ट की शुरुआत

भोपाल, जबलपुर और कोटा रेल मंडलों में ट्रैक के नजदीक लाखों एकड़ जमीन मौजूद है। इसका उपयोग नहीं हो रहा है। प्रवक्ता राहुल जयपुरिया का कहना है कि रेल मंत्रालय की हरित पहल के तहत सभी 16 जोन के तहत आने वाले रेल मंडलों में प्रोजेक्ट की शुरुआत 15 अगस्त के बाद की जा रही है।

पर्यावरण संतुलन...

खास पौधे:

खाली जगह का उपयोग और खुशबू का अहसास

13 देशों तक पहुंचा प्रदेश का बाघ प्रबंधन

विश्व बाघ दिवस ● युवाओं ने किया बाघों की आबादी बढ़ाने पर वर्चुअल वैश्विक बाघ सम्मेलन

बाघों के संरक्षण और प्रजनन में इंदौर प्रदेश में अव्वल

दैनिक भास्कर भोपाल 09-09-2022

अब सेंचुरी में भी टाइगर रिजर्व जैसी सुविधा • रातापानी सेंचुरी में 45 बाघ, 80 तेंदुए और 2 हजार से ज्यादा शाकाहारी वन्य प्राणी हैं

रातापानी देश की पहली सेंचुरी, जहां वन्य जीवों के लिए होगा अस्पताल

पूरे संसाधन के साथ बनेगा वन्य प्राणियों के लिए स्पेशल बाड़ा

अभी तक कोई सुविधा नहीं थी घायल वन्य प्राणियों के लिए

वन विहार को करना पड़ता है कॉल

घायल प्राणियों को मिलेगा इलाज

-विजय कुमार

तत्काल किया जा सकेगा रेस्क्यू

तीन पिंजरे और ट्रांसलोकेशन वाहन भी मिला

सांख्य सागर झील को रामसर साइट में शामिल होने से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा

सिंधिया ने दी शिवपुरीवासियों को बधाई

पहाड़ी पर पानी की खेती... रालामंडल में वर्षा जल सहेजने 250 चेकडैम बनाए

अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल-2022 में पन्ना टाइगर रिजर्व पर बनी फिल्म हुई सिलेक्ट

नवभारत न्यूज

पन्ना, 31 जुलाई. पन्ना टाइगर रिजर्व के बाघ पुनर्स्थापना योजना पर बनी फिल्म एमराल्ड जंगल, रिटर्न ऑफ द टाइगर्स को अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल-2022 के लिए चुना गया है. इसका प्रदर्शन अगले महीने लॉस एंजिल्स में किया जाएगा.

करीब 80 मिनट की यह फिल्म मुंबई के डायरेक्टर सोमेखी लेखी द्वारा बनाई गई है. बता दें कि इसे पूरे एक साल तक अलग-अलग लोकेशन में शूट किया गया. चार माह का समय इसके पोस्ट प्रोडक्शन में लगा है. फिल्म में यह बताने की कोशिश है कि पन्ना टाइगर रिजर्व में दोबारा बाघों का संसार कैसे आबाद हुआ. प्रबंधन को इसके लिए किन संघर्षों से जूझना पड़ा है.

ऐसे बढ़ा था पन्ना में बाघों का कुनबा

जानकारी के अनुसार, 2008 में बाघ विहीन हो चुके पन्ना टाइगर रिजर्व की बाघ टी-3 ने इबारत लिखी है, पन्ना टाइगर रिजर्व में आज 80 के लगभग छोटे-बड़े बाघ है. ये देश व दुनिया के पर्यटकों का मन मोह रहे हैं. मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व 2008-2009 में पुनर्स्थापना योजना लागू की गई थी. बांधवगढ़ से बाघिन टी 1, कान्हा से बाघिन टी 2 और पेंच से नर बाघ टी-3 को लाया गया था. बाघ टी 3 के संपर्क में आने के बाद बाघिन टी 1 ने अप्रैल 2012 में पहली बार में 4 शावकों को जन्म दिया था. इसके बाद फरवरी 2015 में दूसरी बार में 4 और शावकों को जन्म दिया.

Scanned with CamScanner

वानिकी गतिविधियां कार्टूनिस्ट की नजर में

हर धर तिरंगा यात्रा, भोपाल

Dr. Sanjay Kumar Shukla

Monu Dubey

Published by : APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by : Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at : Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M P Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhawan, Bhopal, M.P
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524293, Editor : Dr. U.K. Subuddhi, APCCF (R/E)

मध्यप्रदेश माध्यम/2022